महाकविकालिदासप्रणीतः

श्रुतबोधः

[अन्वय-पदार्थ-संस्कृतव्याख्या-भावार्थ-टिप्पणीसहितः]

संस्कर्त्री

कुमारी सुषमा पाण्डेय

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर,
वाराणसी, पुणे, पटना

महाकविकालिदासप्रणीतः

श्रुतबोधः

[अन्वय-पदार्थ-संस्कृतव्याख्या-भावार्थ-टिप्पणीसहितः]

संस्कर्त्री

कुमारी सुषमा पाण्डेय

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर,
वाराणसी, पुणे, पटना

प्रथम संस्करण : वाराणसी, १९८३
पुनर्मुद्रण : दिल्ली, १९९८

© मोतीलाल बनारसीदास

मोतीलाल बनारसीदास
बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
८ महालक्ष्मी चैम्बर, वार्डेन रोड, मुम्बई ४०० ०२६
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, चेन्नई ६०० ००४
सनाज प्लाजा, सुभाष नगर, पुणे ४११ ००२
१६ सेन्ट मार्क्स रोड, बंगलौर ५६० ००१
८ केमेक स्ट्रीट, कलकत्ता ७०० ०१७
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
चौक, वाराणसी २२१ ००१

मूल्य : रु० १२

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली ११० ००७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस,
ए-४५, नारायणा, फेज-१, नई दिल्ली ११० ०२८ द्वारा मुद्रित

उपोद्घात

भारतीय संस्कृति में वेद को निःश्रेयस का मूल माना गया है और विश्व की सबसे प्राचीन रचना ऋग्वेद आदि से अन्त तक छन्दोमय है। सामवेद भी छन्दों में ही है। अथर्ववेद गद्य-पद्य दोनों में है किन्तु उसका भी अधिक भाग छन्द में ही है। इसीलिये अग्निपुराण में कहा है—**'छन्दः पादौ तु वेदस्य'** अर्थात् जैसे पैर से हीन मनुष्य गतिशील नहीं होता ऐसे ही छन्दोज्ञान के बिना वेद का अर्थ ज्ञान नहीं हो सकता।

इसी प्रकार लौकिक वाङ्मय भी अधिकांश छन्दोमय ही मिलता है। क्योंकि छन्द रचना में माधुर्य होता है। मनुष्य उसे शीघ्र हृदयंगम कर सकता है। उसमें लय और यति होती है जिससे उसका भाव और अर्थ आसानी से समझ में आ जाता है। किसी भी भाव को पद्यबद्ध करने से भाषा में लालित्य आ जाता है और अर्थवैचित्र्य की सृष्टि होती है।

यद्यपि वैदिक और लौकिक वाङ्मय में छन्दों के नाम एक ही होते हैं किन्तु उनमें अन्तर यह है कि वैदिक छन्दों में वर्णों की संख्या ही प्रधान होती है उनमें लघु-गुरु का विचार नहीं होता परन्तु लौकिक छन्दों में वर्णों की संख्या के साथ लघु-गुरु का विचार भी आवश्यक होता है। उदाहरण स्वरूप अनुष्टुप् छन्द ले लें ऋग्वेद प्रातिशाख्य में उसका लक्षण है—**"द्वात्रिंशदक्षरानुष्टुप् चत्वारोऽष्टाक्षराः समाः"** अर्थात् अनुष्टुप् छन्द में ३२ अक्षर होते हैं और ८।८ अक्षर के समान चार चरण होते हैं। लौकिक अनुष्टुप् में भी ३२ अक्षर और ८।८ अक्षर के पाद होते हैं किन्तु उनमें यह आवश्यक है कि प्रत्येक पाद का पञ्चम अक्षर लघु, छठा गुरु हो तथा सप्तम अक्षर २-४ पादों में ह्रस्व और १-३ पादों में दीर्घ हो। इस प्रकार छन्द दो प्रकार के हो जाते हैं वैदिक और लौकिक।

इस छन्दःशास्त्र के प्रथम विवेचक आचार्य पिङ्गल माने जाते हैं। यद्यपि पिङ्गल ने अपने छन्दःसूत्रों में पूर्ववर्ती आचार्यों—क्रौष्टुकि, ताण्डिन, सैतव,

काश्यप, रात, माण्डव्य आदि—का उल्लेख किया है, किन्तु उनके कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते अत: पिङ्गल ही प्रथम आचार्य कहे जाते हैं। तदनन्तर पर्वतीय केदार पाण्डेय का वृत्तरत्नाकर, गङ्गादास की छन्दोमञ्जरी, क्षेमेन्द्र का सुवृत्ततिलक आदि कई ग्रन्थ इस विषय में रचे गये।

श्रुतबोध

इसी क्रम में श्रुतबोध का अध्ययन-अध्यापन प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसमें केवल उन्हीं ३८ छन्दों का विवेचन है जो अधिक प्रचलित हैं। इसलिये प्रारम्भिक अध्ययन के लिये यह अधिक उपयोगी समझा जाता रहा है। दूसरी इसकी विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक छन्द का लक्षण उसी छन्द में किया गया है जिससे लक्षण से ही उदाहरण का ज्ञान हो जाता है, उसके लिये पृथक् श्रम नहीं करना पड़ता।

इसमें यद्यपि गणों का स्वरूप बताया गया है किन्तु छन्दों के लक्षणों में उनका कहीं उपयोग नहीं किया गया, प्रत्युत प्रत्येक छन्द में उसके प्रत्येक वर्ण की गुरु-लघु गणना कर दी गई है। संख्यावाचक शब्दों के लिये ज्योतिष की भाँति इसमें सांकेतिक शब्दों का प्रयोग किया गया है जैसे—वेद=४, मुनि=७, गज=८ आदि। इसी प्रकार उपान्त्य, अन्तिक आदि शब्दों का प्रयोग समीपवर्ती वर्णों के लिये किया गया है। ऐसी कई बातें हैं जो इस ग्रन्थ की प्राचीनता सिद्ध करती हैं, परन्तु प्रारम्भिक शिक्षार्थी के लिये कुछ क्लिष्ट हो जाती हैं।

जन-श्रुति है कि इस ग्रंथ का प्रणयन महाकवि कालिदास ने अपनी पत्नी को शीघ्र छन्दोज्ञान कराने के उद्देश्य से किया था। इसीलिये इसका नाम श्रुतबोध (जिसे सुनने मात्र से छन्दों का बोध हो जाय) रखा और इसमें वे ही छन्द रखे जो अधिक व्यवहार में आते हैं। इसकी पुष्टि इससे भी होती है कि प्रत्येक छन्द का लक्षण करते समय सुमुखि, कान्ते, ललितालापे, कमलेक्षणे आदि स्त्री-वाचक सम्बोधन पदों का प्रयोग किया गया है। अब प्रश्न यह होता है कि क्या ये मेघदूत, अभिज्ञान शाकुन्तल आदि के प्रणेता वही कालिदास हैं या कोई अन्य ? संस्कृत वाङ्मय में प्रायः ४९ रचनायें कालि-

दास के नाम से प्रसिद्ध हैं जिनमें रचना-नैपुण्य, पदलालित्य, भावगाम्भीर्य आदि में पर्याप्त वैभिन्न्य पाया जाता है अतः यह निश्चित है कि ये सब रचनायें एक ही व्यक्ति की नहीं हैं, केवल कुछ श्रृङ्गारिक सम्बोधनों के आधार पर श्रुतबोध के रचयिता को भी सुप्रसिद्ध कविकुल गुरु वही कालिदास मान लेना मेरे विचार से उचित नहीं, ये कोई अन्य कालिदास कवि हो सकते हैं। वे जो भी हों इस ग्रन्थ ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है और छन्दोविषयक प्रारम्भिक ज्ञान के लिये यह चिरकाल से अध्ययनाध्यापन का विषय रहा है।

प्रस्तुत संस्करण

श्रुतबोध की प्राचीन काल से ही कई टीकाएँ हुईं, किन्तु सुकुमारमति छात्रों के लिये वे श्रमसाध्य ही प्रतीत होती हैं, अतः मैंने इस पर यह टीका इस प्रकार लिखी है जिससे हिन्दी के माध्यम से प्रत्येक पद का अर्थ समझ कर संस्कृत व्याख्या से उसके समास और पर्याय जानकर भावार्थ से पूरे लक्षण की अवगति छात्रों को हो जायगी। तदनन्तर टिप्पणी में विशेष बातें, वृत्तरत्नाकर में उस छन्द का लक्षण और सरल उपदेशप्रद अन्य उदाहरण देकर उसमें लघु गुरु द्वारा लक्षण संगति का संकेत कर दिया है। इस प्रकार आशा है आसानी से प्रत्येक छन्द बोधगम्य हो जायगा।

मानव सुलभ चञ्चलता अथवा दृष्टि दोष से यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो सादर प्रार्थना है कि विद्वज्जन उसे सुधार कर अनुगृहीत करें।

—विजयादशमी २०४०,
२२/३९ पंचगंगा, वाराणसी।

सुषमा पाण्डेय

स्मरणबोधार्थं छन्दोलक्षणतालिका

अक्षरपङ्क्ति—आद्य चतुर्थंपञ्चमकं
अनुष्टुब् (श्लोक)—श्लोके षष्ठं गुरु
आख्यानकी
विपरीताख्यानकी-आख्यानकी स्यात्
आर्या—यस्याः पादे प्रथमे
इन्द्रवज्रा—यस्यां त्रिषट्सप्तम
इन्द्रवंशा—यस्यामशोकाङ्कुर
उपगीति—अर्योत्तरार्धतुल्यं
उपजाति—यत्र द्वयोरप्यनयोस्तु
उपेन्द्रवज्रा—यदीन्द्रवज्राचरणेषु
गीति—आर्यापूर्वार्धसमं
चम्पकमाला—तन्वि गुरु
तोटक—सतृतीयकधष्ठ
दोधक—आद्यचतुर्थमहीननितम्बे !
द्रुतविलम्बित—अयि कृशोदरि यत्र
नगस्वरूपिणी—द्वितुर्यषष्ठमष्टमं
पृथ्वी—द्वितीयमलिकुन्तले
प्रभावती—यस्यां प्रिये
प्रमिताक्षरा—यदि तोटकस्य गुरु
प्रहर्षिणी—आद्यं चेत्
भुजङ्गप्रयात—यदाद्यं चतुर्थं
मणिबन्ध—चम्पकमाला यत्र
मदलेखा—तुर्यं पञ्चमकं
मन्दाक्रान्ता—चत्वारः प्राक्
मालिनी—प्रथममगुरुषट्कं
रथोद्धता—आद्यमक्षरमतस्तृतीयकं
वसन्ततिलका—आद्यं द्वितीयमपि चेत्
वंशस्थविल—उपेन्द्रवज्राचरणेषु
विद्युन्माला—सर्वे वर्णा दीर्घा
वैश्वदेवी—ह्रस्वो वर्णः स्यात्
शशिवदना—अगुचरुतुष्कं
शार्दूलविक्रीडित—आद्याश्चेद्गुरव
शालिनी—ह्रस्वो-वर्णो जायते
शिखरिणी—यदा प्राच्यो ह्रस्वः
स्रग्धरा—चत्वारो यत्र वर्णाः
स्वागता—अक्षरं च नवमं
हरिणी—सुमुखि लघवः पञ्च
हरिणीप्लुता—प्रथमाक्षरमाद्यतृतीययोः
हंसी—मन्दाक्रान्तान्त्ययतिरहिता

—×—

विषय-सूची

विषय			पृ० सं०
१. वस्तुनिर्देशात्मक-मङ्गल	...	...	१
२. गुरुवर्ण का ज्ञापन	...	...	२
३. लक्षण पूर्वक गणों के नाम	...	....	४
४. आर्या	...	...	५
५. गीति	...	...	६
६. उपगीति	....	...	७
७. अक्षरपङ्क्ति	...	...	८
८. शशिवदना	...	....	९
९. मदलेखा	...	....	१०
१०. श्लोक (अनुष्टुप्)	...	...	११
११. माणवकाक्रीड	...	...	१३
१२. नगस्वरूपिणी	...	...	१४
१३. विद्युन्माला	...	...	१५
१४. चम्पकमाला	...	...	१६
१५. मणिबन्ध	...	...	१७
१६. हंसी	...	...	१८
१७. शालिनी	...	...	१९
१८. दोधक	....	...	२१
१९. इन्द्रवज्रा	...	....	२२
२०. उपेन्द्रवज्रा	...	...	२३
२१. उपजाति	...	....	२४
२२. आख्यानकी-विपरीताख्यानकी	...	....	२५
२३. रथोद्धता	...	...	२७

२४. स्वागता २८
२५. वैश्वदेवी २९
२६. तोटक ३०
२७. भुजङ्गप्रयात ३२
२८. द्रुतविलम्बित ३३
२९. प्रमिताक्षरा ३४
३०. हरिणीप्लुता ३५
३१. वंशस्थविल (वंशस्थ) ३७
३२. इन्द्रवंशा ३८
३३. प्रभावती ३९
३४. प्रहर्षिणी ४०
३५. वसन्ततिलका ४२
३६. मालिनी ४३
३७. हरिणी ४५
३८. शिखरिणी ४७
३९. पृथ्वी ४८
४०. मन्दाक्रान्ता ५०
४१. शार्दूलविक्रीडित ५२
४२. स्रग्धरा ५४

—: ० :—

श्रीः

श्रुतबोधः

वस्तुनिर्देशात्मक-मंगल

छन्दसां लक्षणं येन श्रुतमात्रेण बुध्यते ।
तमहं संप्रवक्ष्यामि श्रुतबोधमविस्तरम् ॥ १ ॥

गणेशं गिरिशं वाचामीश्वरीं चेष्टदेवताम् ।
प्रणम्य, श्रुतबोधस्य व्याख्यां कुर्वे यथामति ॥

अन्वय—येन श्रुतमात्रेण छन्दसां लक्षणं बुध्यते तं श्रुतबोधम् अहम् अविस्तरं संप्रवक्ष्यामि ।

पदार्थ—येन श्रुतमात्रेण=जिसके सुननेमात्रसे, छन्दसाँ=छन्दोंका, लक्षणं=बोधक चिह्न, बुध्यते=जाना जाता है, तं श्रुतबोधं=उस श्रुतबोध (नामक ग्रन्थ) को, अहं=मैं, अविस्तरं=बिना विस्तार किये (संक्षेपमें) संप्रवक्ष्यामि=कहूँगा ।

व्याख्या—येन=ग्रन्थेन, श्रुतमेव श्रुतमात्रं तेन श्रुतमात्रेण=केवलमाकर्णितेनैव, छन्दसां=वृत्तानां (आर्यानुष्टुबादीनां) लक्षणं=बोधकं चिह्नं (गुरु-लघु विरामादिरूपं) बुध्यते=ज्ञायते, तं श्रुतबोधं=एतादृशं श्रुतबोधाख्यं ग्रंथं अहं=ग्रन्थकृत् न विस्तरो यथास्यात्तथाऽविस्तरं=संक्षेपेण, संप्रवक्ष्यामि=सम्यक्तया वर्णयिष्यामि ।

भावार्थ—जिसके सुनने मात्र से छन्दों (आर्या, अनुष्टुब् आदि वृत्तों) के लक्षण समझ में आ जाते हैं उसी श्रुतबोध नामक ग्रन्थको मैं संक्षेप में कहूँगा ॥ १ ॥

गुरुवर्ण का ज्ञापन

संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गसंमिश्रम् ।
विज्ञेयमक्षरं गुरु पादान्तस्थं विकल्पेन ॥ २ ॥

अन्वय—संयुक्ताद्यं दीर्घं सानुस्वारं विसर्गसंमिश्रम् अक्षरं गुरु विज्ञेयं पादान्तस्थं विकल्पेन (गुरु विज्ञेयम्) ।

पदार्थ—संयुक्ताद्यं=संयुक्त (जुड़े हुए) अक्षरों से पहले का । दीर्घं=दो मात्रा वाला । सानुस्वारं=अनुस्वार सहित । विसर्गसंमिश्रं=विसर्गों से युक्त । अक्षरं=वर्ण । गुरु=गुरु नाम का । विज्ञेयं=जानना चाहिये । पादान्तस्थं पादके अन्तमें स्थित (अक्षर) । विकल्पेन=विकल्पसे (आवश्यकतानुसार) ।

व्याख्या—आदौ भवमाद्यं, संयुक्तात् आद्यं संयुक्ताद्यं=संयुक्ताक्षरात् प्रथमं (अक्षरं गुरु विज्ञेयमित्यनेन संबन्धः) दीर्घं=दीर्घस्वरयुतं द्विमात्रिकमिति यावत् । अनुस्वारेण सहितं सानुस्वारं=अनुस्वारयुक्तं विसर्गेण संमिश्रं विसर्गसंमिश्रं विसर्गसंयुक्तं च अक्षरं=वर्णः ह्रस्वमपीति शेषः । गुरु=गुरुसंज्ञकं विज्ञेयं=ज्ञातव्यं । पादस्यान्ते तिष्ठतीति पादान्तस्थं=वृत्तपादस्यान्तिममक्षरं तु विकल्पेन=स्याद्वा न वा स्यादित्यनिर्णयेन गुरु विज्ञेयं छन्दोऽनुरोधादावश्यके सति गुरु ज्ञेयमन्यथा ह्रस्वमेवेति भावः ॥

भावार्थ—संयुक्ताक्षर से पहला वर्ण, दीर्घवर्ण, अनुस्वार या विसर्ग जिसके साथ हो वह ह्रस्ववर्ण भी गुरु संज्ञक माना जाता है, छन्द के पाद का अन्तिम वर्ण छन्द की आवश्यकतानुसार कहीं गुरु होता है कहीं नहीं भी होता ।

टिप्पणी—एक ह्रस्ववर्ण के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एकमात्रा कहते हैं, अतः ह्रस्व वर्ण (अ इ उ ऋ ऌ) ये एकमात्रिक कहे जाते हैं और (अ+अ=आ) जिनमें दो मात्रा का समय लगे वे द्विमात्रिक या दीर्घ (आ ई ऊ ॠ ए ओ ऐ औ) होते हैं, तीन मात्रा वाले प्लुत और व्यञ्जन (विना स्वर के क् ख् आदि) आधी मात्रा के माने जाते हैं ।

संगीत में इसका विचार इस प्रकार होता है किन्तु छन्द में ह्रस्व (लघु) और दीर्घ (गुरु) का ही प्रयोग होता है। व्यञ्जन की वही मात्रा मानी जाती है जो उससे जुड़े स्वर की हो। जैसे क=लघु, का=दीर्घ, यदि दो व्यञ्जन मिले हों तो वह भी स्वर की मात्रा के अनुसार ही रहेंगे, जैसे 'युक्त' यहाँ क् और त् की कोई मात्रा नहीं होती केवल अ के आधार पर क्त ह्रस्व ही माना जाता है परन्तु उससे पहला अक्षर यु (यदि छन्द में आयेगा तो) गुरु माना जाता है।

छन्द में गुरु का संकेत ऽ और लघु का । है। अथवा गुरु को गु और लघु को ल अक्षर से समझा जाता है।

छन्द के विषय में निम्न बातें सदा स्मरण रखनी चाहिये--

(क) कोई भी पद्य, जिसमें चार पाद हों, छन्द कहलाता है। वह दो प्रकार का होता है—

१. वृत्त और २. जाति या मात्रा। वृत्त में वर्णों की संख्या गिनी जाती है और मात्रा छन्द में मात्राओं की।

(ख) वृत्त तीन प्रकार का होता है १. सम=जिसमें चारों पादों में समान वर्ण हों। २. अर्धसम—जिसमें प्रथम-तृतीय, और द्वितीय-चतुर्थ पादों में समान वर्ण हों। ३. विषम—जिसमें प्रत्येक पाद में भिन्न संख्यक वर्ण हों।'

(ग) गण—मात्रा छन्द में चार मात्राओं का एक गण होता है, इसके पाँच प्रकार हैं—

सर्वगुरु ऽऽ, अन्त्यगुरु ।।ऽ, मध्यगुरु ।ऽ।, आदिगुरु ऽ।। और सर्वलघु ।।।। ये गण आर्या आदि मात्रा छन्दों में प्रयुक्त होते हैं।

वृत्त या वर्ण छन्दों में तीन वर्णों का एक गण होता है, ये आठ होते हैं—

म न भ य ज र स त।

लक्षण पूर्वक गणों के नाम

आदिमध्यावसानेषु भजसा यान्ति गौरवम् ।
यरता लाघवं यान्ति मनौ तु गुरुलाघवम् ।। ३ ।।

अन्वय—भजसाः आदिमध्यावसानेषु गौरवं यान्ति । य र ता (आदिमध्यावसानेषु) लाघवं यान्ति । तु मनौ गुरुलाघवं (यातः) ।

पदार्थ—भजसाः=भगण, जगण और सगण । आदिमध्यावसानेषु=(क्रमसे) आदि, मध्य और अन्त में । गौरवं=गुरुत्व को । यान्ति=प्राप्त करते हैं । यरताः=यगण, रगण और तगण । लाघवं यान्ति-लघुता को प्राप्त करते हैं । मनौ तु=मगण और नगण तो । गुरुलाघवं-(क्रमसे) सर्व गुरुत्व और सर्व लघुत्व को प्राप्त करते हैं ।

व्याख्या—भश्च जश्च सश्चेति भजसाः=भगण-जगण-सगणाः । आदिश्च मध्यश्च अवसानं चेति आदिमध्यावसानानि, तेषु आदिमध्यावसानेषु=प्रथम-मध्यमान्तिमवर्णेषु क्रमेण गौरवं=गुरुभावं यान्ति=प्राप्नुवन्ति । एवमेव यश्च रश्च तश्च यरताः=यगण-रगण-तगणाः क्रमेणादिमध्यावसानेषु लाघवं=लघुभावं यान्ति, मश्च नश्च मनौ=मगणनगणौ तु गुरुलाघवं=गुरुतां लघुतां च, क्रमेण मगणः सर्वगुरुत्वं नगणश्च सर्वलघुत्वमित्यर्थः । यातः इतिशेषः ।

भावार्थ—भगण जगण और सगण के क्रमशः आदि मध्य और अन्त में गुरु वर्ण होता है (जैसे भ-ऽ।।, ज ।ऽ।, स ।।ऽ), इसी प्रकार यगण रगण और तगण के आदिमध्य और अन्त में क्रमशः लघुवर्ण होता है (जैसे य-।ऽऽ, र-ऽ।ऽ, त-ऽऽ।), किन्तु मगण और नगण सर्वगुरु और सर्वलघु होते हैं (जैसे-म-ऽऽऽ और न-।।।) ।

टिप्पणी—गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिये वृत्तरत्नाकर का निम्न-श्लोक अधिक उपयुक्त है—

मस्त्रिगुरुः, त्रिलघुश्च नकारो, भादिगुरुः, पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो, रलमध्यः, सोऽन्तगुरुः, कथितोऽन्तलघुस्तः ।।

(म में तीन गुरु SSS, न में तीनलघु ।।।, भ के आदि में गुरु S।।, और य के आदि में लघु ।SS, ज के मध्य में गुरु ।S।, र के मध्यमें लघु S।S, स के अन्त में गुरु ।।S, और त के अन्त में लघु SS। कहा गया है ।

१. आर्या

S S SS ।।S S।।SS ।S ।SS S

यस्याः पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।

SS।S ।S S ।S।S S।।। S S

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥ ४ ॥

अन्वय—यस्याः प्रथमे पादे द्वादशमात्राः तथा तृतीये अपि, द्वितीये अष्टादश चतुर्थके पञ्चदश सा आर्या (भवति) ।

पदार्थ—यस्याः=जिसके । प्रथमे पादे=पहले चरण में । द्वादशमात्राः= बारह । मात्राएँ हों । तथा=उसीप्रकार । तृतीयेऽपि तीसरे चरण में भी (१२ मात्राएँ) हों । द्वितीये=दूसरे चरण में । अष्टादश=अठारह मात्राएँ । चतुर्थके= चौथे चरण में । पञ्चदश=पन्द्रह मात्रा हों । सा आर्या=वह आर्या (होती है) ।

व्याख्या—यस्याः प्रथमे पादे=प्रथमचरणे, द्वौ च दश च द्वादश=द्वादश-संख्याकाः मात्राः तथा=एवमेव तृतीये चरणे अपि द्वादश एव मात्राः भवन्तीति शेषः । द्वितीये चरणे अष्टौ च दश च अष्टादश=अष्टादश संख्याकाः चतुर्थमेव चतुर्थकं तस्मिन् चतुर्थके=चतुर्थे पादे पञ्च च दश च पञ्चदश=पञ्चदश संख्याका मात्राः भवन्ति सा आर्या=आर्याख्या भवति ।

भावार्थ—जिसके प्रथम पाद में बारह मात्रा और तृतीय पाद में भी बारह मात्रा हों, दूसरे पाद में अठारह और चौथे में पन्द्रह मात्रा हों वह आर्या कहलाती है ।

टिप्पणी—लक्षण ही इसका उदाहरण भी है—(S) गुरु को दो मात्रा और (।) लघु को एक मात्रा समझें ।

'तृतीयेऽपि' यहाँ 'पि' यद्यपि ह्रस्व होने से एक मात्रा होनी चाहिये

किन्तु पाद के अन्त में होने से छन्दोनुरोधवश इसे दो मात्रा वाला गुरु मान लिया गया। (देखिये श्लोक ३)

दूसरा उदाहरण—

S SS S SS S I I S S I S I SS S

पथ्याशी व्यायामी स्त्रीषु जितात्मा नरो न रोगी स्यात्।

I I I I S I I S S S I I S S I S S S

यदि मनसा वचसा वा द्रुह्यति नित्यं न भूतेभ्यः॥

अर्थ—पथ्य भोजन करनेवाला, व्यायाम करने वाला, स्त्रियों के विषय में जितेन्द्रिय, मनुष्य कभी रोगी नहीं होता यदि मन से या वाणी से प्राणियों से द्रोह न करता हो तो ॥१॥

२. गीतिः

S S S S I I S I S I I I S I I I I S I I S

आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयमपि यत्र भवति हंसगते !

S S I S I S S S S S I I I S I S S S

छन्दोविदस्तदानीं गीतिंताममृतवाणि भाषन्ते॥ ५॥

अन्वय—हंसगते ! यत्र आर्यापूर्वार्धसमं द्वितीयम् अपि भवति, अमृतवाणि ! तदानीं छन्दोविदः तां गीतिं भाषन्ते।

पदार्थ—हंसगते !=हे हंस की सी चालवाली ! यत्र=जहाँ, आर्यापूर्वार्धसमं=आर्याछन्दके पूर्वार्ध (प्रथम द्वितीय पाद) के समान। द्वितीयमपि=दूसरा (उत्तरार्ध-तृतीय चतुर्थ चरण) भी हो, अमृतवाणि !=हे मीठे वचनों वाली ! तदानीं=तब, छन्दोविदः=छन्दःशास्त्र को जानने वाले। ताम्=उसे, गीतिं भाषन्ते=गीति कहते हैं।

व्याख्या—हंसस्य गतिरिव गतिर्यस्याः सा हंसगतिः तत्संबुद्धौ हे हंसगते=हंसगमने ! यत्र=यस्मिश्छन्दसि आर्यायाः=पूर्वोक्ताया 'यस्याः पादे प्रथमे' इत्यादिलक्षणलक्षितायाः पूर्वार्धेन=प्रथमभागेन प्रथमद्वितीयपाद-

रूपेणेत्यर्थः समं=तुल्यं द्वितीयमपि=उत्तरार्धमपि भवति अमृतमिव वाणी यस्याः सा अमृतवाणी तत्सम्बुद्धौ हे अमृतवाणि != मधुरवचने तदानीं= तस्यामवस्थायां छन्दांसि विदन्तीति छन्दोविदः=छन्दःशास्त्रज्ञाः तां=स्थितिं गीतिं भाषन्ते = गीत्याख्यया वदन्ति ।

भावार्थ—पूर्वोक्त आर्या छन्द के पूर्वार्ध की तरह जिसका उत्तरार्ध भी हो उसे छन्दोविद लोग गीति छन्द कहते हैं ।

टिप्पणी—आर्या के पूर्वार्ध में १२+१८=३० मात्रा होती हैं और उत्तरार्ध में १२+१५=२७ मात्रा, किन्तु गीति के पूर्वार्ध उत्तरार्ध दोनों में ३०, ३० मात्रा होती हैं ।

इसे पथ्या भी कहते हैं ।

उदाहरण—लक्षण में ही देखें ॥२॥

३. उपगीति

S S I S I S S   I I S I I S   I S S   S

आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रथमार्धमपि प्रयुक्तं चेत् ।

S I I   S I I S S   I S I S S   I S I I S

कामिनि ! तामुपगीतिं प्रकाशयन्ते महाकवयः ॥ ६ ॥

अन्वय—कामिनि चेत् प्रथमार्धम् अपि आर्योत्तरार्धतुल्यं प्रयुक्तं तां महाकवयः उपगीतिं प्रकाशयन्ते ।

पदार्थ—कामिनि=सुन्दरि । चेत्=यदि । प्रथमार्धमपि=पूर्वार्ध भी । आर्योत्तरार्धतुल्यं=आर्या के उत्तरार्ध के समान । प्रयुक्तं=प्रयोगकिया जाय (तो) । महाकवयः=महाकवि लोग । तां=उसे । उपगीतिं=उपगीति नामसे । प्रकाशयन्ते=कहते हैं ।

व्याख्या—कामः अस्या अस्तीति कामिनी तत्संबुद्धौ हे कामिनि != सुन्दरि ! चेत्=यदि प्रथमं च तदर्धं चेति प्रथमार्धं=प्रथमो भागः पूर्वार्धमितियावत् आर्यायाः=पूर्वोक्तलक्षणायाः उत्तरार्धेन=द्वितीयभागेन तुल्यं

समानं प्रयुक्तं=रचितं (भवेत् तदा) महान्तश्च ते कवयश्च महाकवयः= कविश्रेष्ठाः ताम्=रचनाम् उपगीतिं=उपगीतिसंज्ञकां प्रकाशयन्ते= प्रकटीकुर्वन्ति ।

भावार्थ—यदि पूर्वोक्त आर्याछन्द के उत्तरार्ध (तृतीय-चतुर्थ चरण) के समान पूर्वार्ध (प्रथम-द्वितीय चरण) भी हों तो उसे कवि लोग उपगीति कहते हैं ।

टिप्पणी—आर्या के उत्तरार्ध में १२+१५=२७ मात्रा होती हैं यदि पूर्वार्ध में भी २७ ही मात्रा हों तो उपगीति कहलाती है । गीति में आर्या के पूर्वार्ध के समान ही उत्तरार्ध होता है अर्थात् दोनों में ३०।३० मात्रा होती हैं और उपगीति में उत्तरार्द्ध के समान पूर्वार्द्ध ॥३॥

यहाँ तक मात्राछन्द बताये हैं ।

४. अक्षरपङ्क्तिः

S I I SS S I I S S
आद्यचतुर्थं पञ्चमकं चेत् ।
S I I S S S I I S S
यत्र गुरु स्यात्साक्षरपङ्क्तिः ॥ ७ ॥

अन्वय—यत्र आद्यचतुर्थं पञ्चमकं गुरु चेत् सा अक्षरपङ्क्तिः स्यात् ।

पदार्थ—यत्र=जहाँ, आद्यचतुर्थं=पहला और चौथा । पञ्चमकं-पाँचवाँ । गुरु चेत्=यदि गुरु हो । सा अक्षरपङ्क्तिः स्यात्=वह अक्षरपङ्क्ति होती है ।

व्याख्या—यत्र=यस्मिन् वृत्ते, आदौ भवमाद्यम् आद्यं च तच्चतुर्थं च आद्यचतुर्थं प्रथमं चतुर्थं च वर्णमित्यर्थः तथा पञ्चममेव पञ्चमकं=पञ्चममपि वर्णं स्वार्थे क प्रत्ययः गुरु चेत्=यदि गुरु स्यात् सा अक्षरपंक्तिः=अक्षर-पङ्क्त्याख्यं वृत्तं स्यात्=भवेत् ।

भावार्थ—जिस छन्द में पहला चौथा और पाँचवाँ वर्ण गुरु हो (शेष वर्ण लघु हों) वह अक्षरपङ्क्ति कहलाता है ।

टिप्पणी—यहाँ से वृत्तप्रकरण प्रारम्भ होता है अर्थात् वर्णों के अनुसार छन्द वर्णित हैं एक अक्षर के चरण से लेकर २६ अक्षर तक के प्रत्येक चरण वाले ये वृत्त या वर्ण छन्द कहलाते हैं, इससे अधिक अक्षरों वाले दण्डक कहलाते हैं, जिनमें तीन या ६ चरण होते हैं उन्हें गाथा कहते हैं, यह स्मरण रखना चाहिये ।

इस छन्द का नाम अन्य छन्दोग्रन्थों में 'पङ्क्ति' है यहाँ अक्षरपङ्क्ति कहा है । कालिदास ने ५ अक्षर वाले छन्द से प्रारम्भ कर प्राय: प्रसिद्ध छन्दों को ही यहाँ बताया है । वृत्तरत्नाकर आदि में 'भ्गौ ग: पङ्क्ति' अर्थात् प्रत्येक चरण में भगण और दो गुरु वर्ण जहाँ हों वह पंक्ति है, यह लक्षण किया है ।

अन्य उदाहरण—

S I I S S   S I I S S
कृष्णसनाथा तर्णकपङ्क्तिः
S I I S S   S I   I S S
यामुनकच्छे चारु चचार

अर्थ—(कृष्ण की संरक्षकता में बछड़ों का समूह यमुना के तटपर निश्चिन्त होकर घूमता था ।

यहाँ अन्तिम वर्ण र ह्रस्व होने पर भी पादान्त होने से गुरु मान लिया है ॥ ४ ॥

५. शशिवदना

I I I   I S S   I I I   I S S
अगुरु चतुष्कं भवति गुरू द्वौ ।
घनकुचयुग्मे शशिवदनासौ ॥ ८ ॥

अन्वय—घनकुचयुग्मे ! चतुष्कम् अगुरु द्वौ गुरू असौ शशिवदना भवति ।
पदार्थ—चतुष्कं=चारवर्णों का समुदाय । अगुरु=गुरु न हो । द्वौ गुरू=

दो गुरु (हों) । घनकुचयुग्मे=हे घने कुचयुगलवाली ! असौ=यह । शशिवदना भवति = शशिवदना छन्द होता है ।

व्याख्या—कुचयोः युग्मं कुचयुग्मं, घनं कुचयुग्मं यस्याः सा घनकुचयुग्मा तत्संबुद्धौ हे घनकुचयुग्मे=निविडस्तनयुगले ! यत्र=वृत्ते, चत्वारोऽवयवा यस्य तत् चतुष्कं=वर्णचतुष्टयम् आद्यमित्यध्याहार्यम्, न गुरु अगुरु=गुरुरहितम् लघ्वित्यर्थः, तदनन्तरं द्वौ गुरू=वर्णद्वयं द्विमात्रिकं स्यात् असौ=एषा शशिवदना= तदाख्या भवति ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में प्रथम चार वर्ण गुरु न हों अर्थात् लघु हों और उसके बाद दो वर्ण गुरु हों वह शशिवदना होती है ।

टिप्पणी—यह छः वर्ण के चरण वाला छन्द है । अन्य छन्दोग्रन्थों में इसका लक्षण है—'शशिवदना न्यौ' जिसके प्रत्येक चरण में नगण और यगण हों वह शशिवदना छन्द है ।

अन्य उदाहरण—

I I I I S S   I I I I S S

शशिवदनानां व्रजयुवतीनां ।
अधरसुधोर्मि मधुरिपुरैच्छत् ॥

अर्थ—मधुसूदन कृष्ण, चन्द्र जैसे मुखवाली व्रजाङ्गनाओं के अधरसुधारस को चाहने लगे ॥ ५ ॥

६. मदलेखा

S S S I I S S S S S I I S S

तुर्यं पञ्चमकं चेद् यत्र स्याल्लघु बाले ।
विद्वद्भिर्मृगनेत्रे प्रोक्ता सा मदलेखा ॥ ९ ॥

अन्वय—बाले ! यत्र तुर्यं पञ्चमकं लघु स्यात् चेत्, मृगनेत्रे ! विद्वद्भिः सा मदलेखा प्रोक्ता ।

पदार्थ—तुर्यं=चौथा । पञ्चमकं=पाँचवाँ । लघु स्याच्चेत्=लघु हो तो । विद्वद्भिः=विद्वानों से । सा=वह । मदलेखा प्रोक्ता=मदलेखा कही गई है ।

व्याख्या—हे बाले !=हे मुग्धे ! यत्र=यस्मिन् वृत्ते तुर्यं=चतुर्थं पञ्चममेव पञ्चमकं=पञ्चमं चाक्षरं (स्वार्थे क प्रत्ययः) लघु स्याच्चेत् = लघु भवेच्चेत् विद्वद्भिः=बुधजनैः मृगस्य नेत्रे इव नेत्रे यस्याः सा मृगनेत्रा तत्संबुद्धौ हे मृगनेत्रे=हरिणलोचने ! सा मदलेखा प्रोक्ता = कथिता ।

भावार्थ—हे बाले ! जिसके प्रत्येक पाद का चतुर्थ और पञ्चमवर्ण लघु हो तो उसे विद्वान् लोग मदलेखा कहते हैं ।

टिप्पणी—यह सात अक्षर के पादवाला छन्द है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है "म्सौ गः मदलेखा" अर्थात् जिसके प्रतिपाद में मगण, सगण और एक गुरु हो वह मदलेखा छन्द है,

अन्य उदाहरण—

S S S I I S S

रङ्गेबाहुविरुग्णाद् दन्तीन्द्रान्मदलेखा ।
लग्नाभून्मुरशत्रौ कस्तूरीरसचर्चा ॥

अर्थ—रङ्गभूमि में गजेन्द्र (कुवलयापीड़) के कटे हुए सूँड़ से निकला हुआ मदजल मुरारि (कृष्ण) के शरीर में लग कर कस्तूरी रस जैसा लगने लगा ॥९॥

७. श्लोक (अनुष्टुब्)

I S S I S I

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।

I S S I S I

द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥ १० ॥

अन्वय—श्लोके सर्वत्र षष्ठं गुरु पञ्चमं लघु द्विचतुष्पादयोः सप्तमं ह्रस्वं अन्ययोः दीर्घं ज्ञेयम् ।

पदार्थ—श्लोके=श्लोक नामक छन्द में । सर्वत्र=सभी पादों में । षष्ठं=छठा अक्षर । गुरु=दीर्घ । पञ्चमं=पाँचवाँ । लघु=ह्रस्व । द्विचतुष्पादयोः=

दूसरे और चौथे पाद में । सप्तमं=सातवाँ अक्षर । ह्रस्वं=लघु । अन्ययोः= और (प्रथम, तृतीय) पादों में । दीर्घं ज्ञेयं=दीर्घ जानना चाहिये ।

व्याख्या—श्लोके=श्लोकाख्ये वृत्ते सर्वत्र=सर्वेष्वपि पादेषु षष्ठमक्षरं गुरु=दीर्घं ज्ञेयं=ज्ञातव्यमिति सर्वैः संयुज्यते । पञ्चमं चाक्षरं सर्वत्र लघु= ह्रस्वं ज्ञेयं द्वितीयश्च चतुर्थश्च द्विचतुर्थौ, द्विचतुर्थौ च तौ पादौ च तयोः द्विचतुष्पादयोः=द्वितीये चतुर्थे च पादे सप्तममक्षरं ह्रस्वं=लघु ज्ञेयम् अन्यश्च अन्यश्च तौ अन्यौ तयोः अन्ययोः=द्वितीयचतुर्थादतिरिक्तयोः प्रथमतृतीयपादयोरित्यर्थः दीर्घं=गुरु ज्ञेयम् ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में छठा अक्षर दीर्घ हो और पाँचवाँ अक्षर लघु हो, सप्तम अक्षर दूसरे और चौथे पाद में ह्रस्व हो तथा अन्य (प्रथम-तृतीय) पादों में दीर्घ हो उसे श्लोक नाम से जाना जाता है ।

टिप्पणी—यह आठ अक्षर के पाद वाला छन्द है । इसे अनुष्टुप्, पद्य आदि कईनामों से जाना जाता है । संस्कृत वाङ्मय में इस छन्द का अत्यधिक प्रयोग हुआ है ।

अन्य उदाहरण—

। ऽ ऽ   । ऽ ।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये

। ऽ ऽ   । ऽ ।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ

अर्थ—वाणी के अर्थ को प्राप्त करने के लिये । वाणी और अर्थ की तरह परस्पर जुड़े हुए, संसार के माता-पिता पार्वती और परमेश्वर को प्रणाम करता हूँ ।

इस छन्द में यह स्मरण रखना चाहिये कि पादों में गणों की योजना निश्चित नहीं होती । सभी पादों में छठा अक्षर गुरु और पाँचवाँ लघु होना ही चाहिये ऐसे ही सप्तम अक्षर २,४ पादों में ह्रस्व और १,३ पादों में दीर्घ होना ही चाहिये । शेष अक्षर ह्रस्व भी हो सकते हैं दीर्घ भी, इससे कोई अन्तर नही पड़ता ॥७॥

८ माणवकाक्रीड

S I I S S I I S S I I S S I I S

आदिगतं तुर्यगतं पञ्चमकं चान्त्यगतम् ।
स्याद् गुरु चेत्तत्कथितं माणवकाक्रीडमिदम् ।। ११ ।।

अन्वय—आदिगतं तुर्यगतं पञ्चमकं अन्त्यगतं च स्याच्चेत् तत् इदं माणवकाक्रीडं कथितम् ।

पदार्थ—आदिगतं=पहला । तुर्यगतं=चौथा । पञ्चमकं=पाँचवाँ । अन्त्यगतं=अन्तिम (आठवाँ) । गुरु स्याच्चेत्=यदि गुरु हो तो । तत् इदं=वह यह (छन्द) । माणवकाक्रीडं कथितम्=माणवकाक्रीड कहा गया है ।

व्याख्या—आदि गतम् आदिगतं=प्रथमस्थं तुर्यं गतं तुर्यगतं=चतुर्थेस्थितं पंचममेव पंचमकं=पंचमस्थम् अन्त्यं गतम् अन्त्यगतम्=चरणस्यान्तिमं वर्णमित्यध्याहार्यं चेत्=यदि गुरु स्यात्=द्विमात्रिकं भवेत् तत्=तदा इदं=वृत्तं माणवकाक्रीडं=माणवकाक्रीडाभिधं कथितम् कविभिरितिशेषः ।

भावार्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में पहला, चौथा, पाँचवाँ और अन्तिम (आठवां) अक्षर गुरु हो उसे कवियों ने माणवकाक्रीड कहा है ।

टिप्पणी—यह भी अष्टाक्षर पाद वाला छन्द है । पिङ्गलसूत्र के आधार पर ग्रन्थकार ने यह नाम दिया है । वृत्तरत्नाकर आदि में केवल माणवक नाम है, लक्षण है—"माणवकं भात्तलगाः" अर्थात् भगणऽ।। तगणऽऽ।, लघु और गुरु जिसके प्रत्येक चरण में हों वह माणवक होता है ।

दूसरा उदाहरण—

S I I S S I I S S I I S S I I S

माणवकाक्रीडितकं यः कुरुते वृद्धवयाः ।
हास्यमसौ यातिजने भिक्षुरिव स्त्रीचपलः ।।

अर्थ—जो वृद्धावस्था में भी बच्चों का सा खेल करता है वह लोगों में हंसी का पात्र बन जाता है जैसे स्त्रीलम्पट भिक्षुक ।। ८ ।।

९. नगस्वरूपिणी

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
द्वितुर्यषष्ठमष्टमं गुरुप्रयोजितं यदा
तदा निवेदयन्ति तां बुधा नगस्वरूपिणीम् ॥१२॥

अन्वय--यदा द्वितुर्यषष्ठम् अष्टमं गुरु प्रयोजितं तदा बुधाः तां नगस्वरूपिणीं निवेदयन्ति ।

पदार्थ—यदा = जब । द्वि = दूसरा , तुर्य = चौथा, षष्ठं = छठा, अष्टमं = आठवाँ । गुरु प्रयोजितं = गुरु प्रयोग किया हो । तदा = तब । बुधाः = विद्वान् । तां = उसे । नगस्वरूपिणीं = नगस्वरूपिणी (नाम से) । निवेदयन्ति = कहते हैं ।

व्याख्या--यदा द्वितीयं च तुर्यं च षष्ठं चेति द्वितुर्यषष्ठं = द्वितीय-चतुर्थ-षष्ठाक्षराणीति भावः । अष्टमं = अन्तिमाक्षरं च गुरु = द्विमात्रिकं प्रयोजितं = प्रयोगविषयीकृतं तदा बुधाः = विद्वांसः तां = छन्दोरूपां वाणीं नगस्वरूपिणीं = नगस्वरूपिणीनामधेयां निवेदयन्ति = कथयन्ति ।

भावार्थ--जब प्रत्येक चरण का दूसरा, चौथा, छठा और आठवाँ वर्ण गुरु प्रयोग किया जाय तो विद्वान् लोग उसे नगस्वरूपिणी कहते हैं ।

टिप्पणी—यह भी अष्टाक्षर पाद वाला छन्द है । इसे पिंगलसूत्रादि अन्य ग्रंथकारों ने प्रमाणिका नाम से कहा है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"प्रमाणिका जरौ लगौ' अर्थात् जगण ।ऽ।, रगण ऽ।ऽ लघु । गुरु ऽ जिसमें हों वह प्रमा- णिका है । इसको समझने की सरल रीति है कि इसमें प्रत्येक अक्षर लघु-गुरु क्रम से होता है ।

दूसरा उदाहरण—

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
पुनातु भक्तिरच्युता सदाऽच्युताङ्घ्रिपद्मयोः ।
श्रुतिस्मृतिप्रमाणिका भवाम्बुराशितारिका ॥

अर्थ—श्रुतियों और स्मृतियों में जिसके प्रमाण हों ऐसी, संसार समुद्र

से पार कराने वाली अच्युत भगवान् के चरणकमल की दृढ़ भक्ति मुझे पवित्र करे ॥ ९ ॥

१०. विद्युन्माला

ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽऽऽ ऽ ऽऽऽऽ

सर्वे वर्णा दीर्घा यस्यां विश्रामः स्याद् वेदैर्वेदैः ।
विद्वद्वृन्दैर्वीणावाणि ! व्याख्याता सा विद्युन्माला ॥१३॥

अन्वय—हे वीणावाणि ! यस्यां सर्वे वर्णाः दीर्घाः वेदैः वेदैः विश्रामः स्यात् सा विद्वद्वृन्दैः विद्युन्माला कथिता ।

पदार्थ—वीणावाणि ! =वीणा के समान (मधुर) स्वर वाली । यस्यां= जिसमें । सर्वे वर्णाः=सभी वर्ण । दीर्घाः=गुरु हों । वेदैः वेदैः=चार-चार वर्णों से । विश्रामः स्याद्=विराम हो । सा=वह । विद्वद्वृन्दैः=विद्वानों के समूहों से, विद्युन्माला व्याख्याता=विद्युन्माला कही गई है ।

व्याख्या—वीणायाः वाणीव वाणी यस्याः सा वीणावाणी तत्सम्बुद्धौ हे वीणावाणि ! =मधुरभाषिणि यस्यां=छन्दोरूपायां सर्वे वर्णाः=अष्टावप्यक्षराणि दीर्घाः द्विमात्रिकाणि भवेयुः वेदैः वेदैः=चतुर्भिश्चतुर्भिरक्षरैः विश्रामः-विरामः स्यद् विदुषां वृन्दानि विद्वद्वृन्दानि तैः विद्वद्वृन्दैः=विदुषां समूहैः विद्युन्माला= एतन्नामकं वृत्तं व्याख्याता=कथिता ।

भावार्थ—हे मधुरभाषिणि ! जिस छन्द के प्रत्येक चरण में सभी (आठों) अक्षर गुरु हों और चार-चार अक्षरों पर विराम होता हो उसे विद्वान् लोग विद्युन्माला कहते हैं ।

टिप्पणी—यह भी आठ अक्षर का छन्द है वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है 'मो मो गो गो विद्युन्माला' अर्थात् मगण ऽऽऽ मगण ऽऽऽ गुरु ऽ गुरु ऽ यदि प्रत्येक चरण में हो तो विद्युन्माला छन्द होता है ।

यहाँ विश्राम शब्द आया है । इसका लक्षण छन्दो मंजरी में दिया है— "यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते" बोलते-बोलते जहाँ जिह्वा विश्राम

करना चाहती है उसे यति, विराम, विश्राम, विच्छेद आदि नामों से जाना जाता है।

दूसरा उदाहरण—

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

वासोवल्ली विद्युन्माला बर्हश्रेणी शाक्रश्चापः।
यस्मिन्स स्तात्तापोच्छित्यै गोमध्यस्थः कृष्णाम्भोदः॥

अर्थ—जिनके देह में पीताम्बर विद्युल्लता जैसा, मोरपङ्ख इन्द्रधनुष जैसा है और गायों के झुण्ड के बीच स्थित यह कृष्णरूपी बादल हमारे (संसार रूप) ताप को नष्ट करने वाला होवे ॥ ११ ॥

१२. चम्पकमाला

ऽ । ।ऽ ऽ ऽ।।ऽऽ

तन्वि गुरु स्यादाद्यचतुर्थं पञ्चमषष्ठं चान्त्यमुपान्त्यम्
इन्द्रियबाणैर्यत्र विरामः सा कथनीया चम्पकमाला ॥।४॥

अन्वय—हे तन्वि ! आद्यचतुर्थं पञ्चमषष्ठं अन्त्यम् उपान्त्यं च गुरु स्यात् इन्द्रियबाणैः यत्र विरामः सा चम्पकमाला कथनीया।

पदार्थ—तन्वि=कृशाङ्गि। आद्यचतुर्थं=पहला और चौथा। पञ्चम षठं= पाँचवाँ और छठा। अन्त्यं अन्तिम (दसवाँ)। उपान्त्यं अन्त के समीपका (नौवाँ)। गुरु स्यात् द्विमात्रिक हो। इन्द्रियबाणैः=पाँच-पाँच (अक्षरं) से। यत्र विरामः=जहाँ यति हो। सा=वह। चम्पकमाला कथनीया=चम्पकमला कहनी चाहिये।

व्याख्या—हे तन्वि =हे कृशाङ्गि ! यत्र वृत्ते आद्यं च चतुर्थं च तदाद्यचतुर्थं=प्रथमं चतुर्थं चेत्यर्थः। पञ्चमं च षष्ठं च पञ्चमषष्ठं=पञ्चमं षठं चेत्यर्थः। अन्ते भवम् अन्त्यं=चरणान्तिमं दशममित्यर्थः अन्त्यस्य समीपमुपान्त्यं= अन्त्यात् प्रथमं नवममितियावत् वर्णं गुरु स्यात्=द्विमात्रिकं भवेत् तथा इन्द्रियाणि (पञ्च) च बाणाश्चेति तैः इन्द्रियबाणैः=पञ्चपञ्चभिरित्यर्थः विरामः यति स्यात् सा विद्वद्भिः चम्पकमाला कथनीया वक्तव्या।

भावार्थ--जिस छन्द का पहला, चौथा, पाँचवाँ, छठा, अन्तिम (दसवाँ) तथा उसके समीप का (नौवाँ) वर्ण गुरु हो और पांच-पाँच वर्णों पर विराम हो उसे चम्पकमाला कहते हैं।

टिप्पणी:—यह १० अक्षर के पाद वाला छन्द है। केदारभट्ट प्रणीत वृत्तरत्नाकर आदि ग्रन्थों में इसे रुक्मवती नाम से कहा है और इसका लक्षण किया है—"भ्मौ सगयुक्तौ रुक्मवतीयम्' भगण ऽ।। मगण ऽऽऽ सगण ।।ऽ और गुरु जिसके प्रत्येक चरण में हों वह रुक्मवती कहलाती है।

दूसरा उदाहरण—

ऽ।। ऽऽ।।ऽऽ

पादतले पद्मोदरगौरे राजति यस्या ऊर्ध्वगरेखा।
सा भवति स्त्री लक्षणयुक्ता रुक्मवती सौभाग्यवती च ॥

अर्थ—जिसके कमलपराग जैसे गोरे चरणतलों में ऊर्ध्व रेखा हो वह सुन्दरलक्षणों वाली स्त्री धनवती और सौभाग्यवती होती है।

१३. मणिबन्ध

ऽ। ।ऽऽ ऽ। ।ऽ

चम्पकमाला यत्र भवेदन्त्यविहीना प्रेमनिधे।
छन्दसि दक्षा ये कवयस्तन्मणिबन्धं ते ब्रुवते ॥१५॥

अन्वय--हे प्रेमनिधे ! यत्र चम्पकमाला अन्त्यविहीना भवेत् ये कवयः छन्दसि दक्षाः ते तत् मणिबन्धं ब्रुवते।

पदार्थ—प्रेमनिधे ! =स्नेहपूर्णे यत्र=जिसमें। चम्पकमाला=पूर्वोक्तछन्द। अन्त्यविहीना=अन्तिम अक्षर से रहित हो। छन्दसि दक्षाः=छन्दः शास्त्र में प्रवीण। ये कवयः=जो कवि लोग हैं। ते=वे। तत्=उस छन्द को। मणिबन्धं ब्रुवते=मणिबन्ध कहते हैं।

व्याख्या—प्रेम्णां निधिः प्रेमनिधिः तत्सम्बुद्धौ हे प्रेमनिधे=प्रेमास्पदे ! यत्र=छन्दसि चम्पकमाला पूर्वोक्तं दशाक्षरं वृत्तं, अन्ते भवम् अन्त्यम् अन्त्येन

विहीना अन्त्यविहीना=अन्त्याक्षरेण रहिता नवाक्षरेति यावत्। भवेत् छन्दसि=छन्दःशास्त्रे, दक्षाः=प्रवीणाः ये कवयः=ये विद्वांसः ते तत्=छन्दः मणिबन्धं=मणिबन्धाख्यं ब्रुवते=कथयन्ति ।

भावार्थ—हे प्रेमनिधे ! पूर्वोक्त चम्पकमाला (दशाक्षर वृत्त) में यदि अन्तिम (दसवाँ) अक्षर न रहे (केवल ९ अक्षर हों) तो छन्दःशास्त्र के ज्ञाता विद्वान् उसे मणिबन्ध कहते हैं ।

टिप्पणी—यह ९ अक्षर का छन्द है । छन्दोमंजरी में इसे मणिमध्य नाम दिया है और लक्षण किया है—"स्यान्मणिमध्यं चेद् भमसाः" अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से भगण ऽ।। मगण ऽऽऽ और सगण ।।ऽ हो उसे मणिमध्य कहते हैं ।

अन्य उदाहरण—

ऽ ।।ऽ ऽऽ।।ऽ

कालियभोगाभोगगतस्तन्मणिमध्यस्फीतरुचा ।

चित्रपदाभो नन्दसुतश्चारु ननर्त स्मेरमुखः ॥

अर्थ—कालियनाग की देह पर कूदे हुए, उसके मस्तकरूप मणि की दीप्त-कान्ति से चित्रित चरणों वाले नन्दसूनु श्रीकृष्ण हँसते हुए सुन्दर नाच किये ।

१४. हंसी

ऽऽ ऽऽ ।। ।।। ऽ

मन्दाक्रान्तान्त्ययतिरहिता सालङ्कारे!भवति यदि सा ।

विद्वद्वृन्दैर्ध्रुवमभिहिता ज्ञेया हंसी कमलवदने ! ॥१६॥

अन्वय—सालङ्कारे यदि मन्दाक्रान्ता अन्त्ययतिरहिता भवति तदा हे कमलवदने विद्वद्वृन्दैः अभिहिता सा ध्रुवं हंसी ज्ञेया ।

पदार्थ—सालङ्कारे !=हे आभूषणों से भूषित सुन्दरी ! यदि मन्दाक्रान्ता=मन्दाक्रान्ता नामक वृत्त । अन्त्ययतिरहिता=अन्तिमविराम (अन्तिम ७ अक्षरों) से रहित हो तो । कमलवदने !=हे कमलसदृश-

मुखवाली ! विद्वद्वृन्दैः=पण्डितसमूहोंसे, अभिहिता=कही गई (वह)। ध्रुवं=निश्चय ही। हंसी ज्ञेया=हंसी नामक समझनी चाहिए।

व्याख्या—अलङ्कारैः सहिता सालङ्कारा तत्सम्बुद्धौ हे सालङ्कारे=आभूषणैराभूषिते सुन्दरि यदि=चेत् मन्दाक्रान्ता=पूर्वमुक्ता सप्तदशाक्षरा, अन्तेभवा अन्त्या, अन्त्या च या यतिश्च सा अन्त्ययतिः तया रहिता अन्त्ययति-रहिता=सप्ताक्षरात्मकेनान्त्यविरामेण विहीना भवति तदा कमलमिव वदनं यस्याः सा कमलवदना तत्संबुद्धौ हे कमलवदने=सरोजमुखि विदुषां वृन्दानि विद्वद्वृन्दानि तैः विद्वद्वृन्दैः=पण्डितवर्गैः सा ध्रुवं=निश्चयमेव हंसी=एतन्नाम्नी ज्ञेया=बोध्या।

भावार्थ—हे कमलवदने सुन्दरी ! मन्दाक्रान्ता छन्द से अन्तिम यति (अन्त के सात अक्षर) हटा दी जाय तो विद्वान् लोग उसे हंसी नाम से कहते हैं।

टिप्पणी—यह दस अक्षरों के पादवाला छन्द है, मन्दाक्रान्ता १७ अक्षर के पादवाला छन्द आगे बताया है। उसमें ४, ६ और ७ अक्षरों पर विराम होता है। इसमें अन्तिम सात अक्षरों वाला विराम नहीं होता। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—'ज्ञेया हंसी म भ न ग युता' अर्थात् मगण SSS भगण SII नगण III और गुरु S जिसमें हों वह हंसी छन्द है।

१५ शालिनी

S I I S S S I S I S S

ह्रस्वो वर्णो जायते यत्र षष्ठः
कम्बुग्रीवे ! तद्वदेवाष्टमान्त्यः।
विश्रामः स्यात्तन्वि वेदैस्तुरङ्गै-
स्तां भाषन्ते शालिनीं छान्दसीयाः ॥ १७ ॥

अन्वय—कम्बुग्रीवे ! यत्र षष्ठः वर्णः ह्रस्वः जायते तद्वदेव अष्टमान्त्यः तन्वि ! वेदैः तुरङ्गैः विश्रामः स्यात् तां छान्दसीयाः शालिनीं भाषन्ते ॥

पदार्थ—कम्बुग्रीवे = शंख जैसी गर्दन वाली ! यत्र=जिसमें, षष्ठः वर्णः = छठा अक्षर, ह्रस्वः जायते=लघु होता है । तद्वदेव=उसीप्रकार, अष्टमान्त्यः= अष्टम के बाद का (नौवाँ वर्ण भी ह्रस्व होता है) वेदैः=चार, (और) तुरङ्गैः=सात (अक्षरों के बाद) । विश्रामः स्यात्=विराम होता हो । तां=उसे, छान्दसीयाः=छन्दःशास्त्रज्ञ लोग । शालिनीं भाषन्ते=शालिनी कहते हैं ।

व्याख्या—कम्बुवत् ग्रीवा यस्याः सा कम्बुग्रीवा तत्संबुद्धौ हे कम्बुग्रीवे = शङ्खसदृशकन्धरावति ! यत्र=वृत्ते षष्ठः वर्णः=षष्ठाक्षरः ह्रस्वः=लघुः जायते=भवति तद्वदेव=तेनैव प्रकारेण अष्टमस्य अन्त्यः अष्टमान्त्यः = अष्टमात्पर-वर्ती नवम इति भावः । वर्णः ह्रस्वो भवेदिति शेषः, वेदैः=चतुर्भिः तुरङ्गैः= सप्तभिश्च वर्णैः विश्रामः स्यात्=यतिर्भवेत् छन्दांसि विदन्तीति छान्दसीयाः= छन्दःशास्त्रज्ञाः तां शालिनीं भाषन्ते शालिनी-इत्याख्यया तां वदन्ति ।

भावार्थ—जिसमें छठा और नौवाँ वर्ण ह्रस्व हो (शेष सभी वर्ण गुरु हों और चार तथा सात अक्षरों पर विराम हो, हे सुन्दरि ! छन्दःशास्त्रज्ञ उसे शालिनी छन्द कहते हैं ।

टिप्पणी—यह ११ अक्षर के पाद का छन्द है, इसमें छठा और नौवां दो ही वर्ण लघु होते हैं शेष सब गुरु । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"शालि-न्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः" अर्थात् मगण ऽऽऽ तगण ऽऽ। तगण ऽऽ। और दो गुरु हों तथा चार और सात वर्णों पर विराम हो तो उसे शालिनी कहते हैं ।

दूसरा उदाहरण—

ऽ। । ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽ

अंहो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते धर्मं धत्ते काममर्थं च सूते ।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्तिः ॥

अर्थ—श्रद्धापूर्वक की हुई विष्णु की भक्ति सर्वदा उपासना करने से मनुष्यों के पाप को नष्ट करती है, धर्म को धारण कराती है, काम और इच्छा की पूर्ति करती है और मुक्ति प्रदान करती है ।

१६. दोधकम्

S I I S I I S I I S S

आद्यचतुर्थमहीननितम्बे ! सप्तमकं दशमं च तथान्त्यम् ।
यत्र गुरु प्रकटस्मरसारे ! तत्कथितं ननु दोधकवृत्तम् ॥१८॥

अन्वय—अहीननितम्बे ! प्रकटस्मरसारे ! यत्र आद्यचतुर्थं सप्तमकं दशमं तथा अन्त्यं च गुरु (स्यात्) तत् दोधकवृत्तम् कथितं ननु ।

पदार्थ—अहीननितम्बे=हे बड़े-बड़े नितम्बों वाली ! प्रकटस्मरसारे= जिसमें काम के लक्षण प्रकट हो चुके हैं ऐसी । आद्यचतुर्थ=पहला और चौथा, सप्तमकं दशमं च=सातवाँ और दसवाँ, अन्त्यं=अन्तिम (ग्यारहवाँ) गुरु= दीर्घ हो, तत्=वह, दोधकवृत्तं=दोधक नाम का छन्द, कथितम्=कहा गया है ।

व्याख्या—न हीनौ अहीनौ, अहीनौ नितम्बौ यस्याः सा अहीननितम्बा तत्संबुद्धौ हे अहीननितम्बे=स्थूलनितम्बे ! कटिपश्चाद्भागो नितम्बः । प्रकटः स्मरस्य सारो यस्याः सा प्रकटस्मरसारा तत्संबुद्धौ हे प्रकटस्मरसारे=स्पष्ट-लक्षितकामुकत्वे, यत्र=यस्मिन् वृत्ते आद्यं च चतुर्थं चेति आद्यचतुर्थं=प्रथमं चतुर्थं चेत्यर्थः, सप्तममेव सप्तमकं=सप्तमाक्षरं, दशमं=दशमाक्षरं तथा अन्ते-भवम् अन्त्यं=अन्तिममेकादशाक्षरं गुरु=द्विमात्रिकं स्यात् तत् दोधकवृत्तं= दोधकाख्यं छन्दः कथितम्=उक्तम् ।

भावार्थ—जिसके प्रत्येकचरण में पहला, चौथा, सातवाँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ अक्षर गुरु हो उसे दोधक छन्द कहते हैं ।

टिप्पणी—यह ग्यारह अक्षर के पाद का छन्द है, छन्दोमञ्जरी में इसका स्पष्ट और सरल लक्षण है—"दोधकमिच्छतिभ त्रितयाद्गौ" जिसमें तीन भगण S I I S I I S I I तथा दो गुरु S S हों वह दोधक छन्द है ।

दूसरा उदाहरण—

S I I S I I S I I S S

देव सदोध कदम्बतलस्थ श्रीधर तावक नामपदं मे ।
कण्ठतलेऽसुविनिर्गमकाले स्वल्पमपि क्षणमेष्यति योगम् ॥

अर्थ—हे देव ! हे बछड़ों सहित ! हे कदम्ब वृक्ष के नीचे स्थित ! हे श्रीधर ! प्राण निकलते समय थोड़ी देर के लिये भी क्या तुम्हारे नाम मेरे कण्ठ से उच्चरित होंगे ?

१७. इन्द्रवज्रा

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

यस्यां त्रिषट् सप्तममक्षरं स्याद् ह्रस्वं सुजङ्घे ! नवमं च तद्वत् ।
गत्या विलज्जीकृतहंसकान्ते ! तामिन्द्रवज्रां ब्रुवते कवीन्द्राः ॥१६॥

अन्वय—सुजङ्घे ! गत्या विलज्जीकृतहंसकान्ते ! यस्यां त्रिषट् सप्तमम् अक्षरं तद्वत् नवमं च ह्रस्वं स्यात् तां कवीन्द्राः इन्द्रवज्रां ब्रुवते ॥

पदार्थ—सुजङ्घे !=हे सुन्दर जङ्घावाली ! गत्या=गमन (चाल) से, विलज्जीकृतहंसकान्ते !=अत्यन्त लज्जित कर दिया है हंसी को जिसने ऐसी । यस्यां=जिसमें, त्रिषट्सप्तममक्षरं=तीसरा छठा सातवाँ अक्षर । तद्वत्= उसी प्रकार । नवमं च=नौवाँ अक्षर भी, ह्रस्वं स्यात्=लघु हो । ताम्=उसे, कवीन्द्राः=कविश्रेष्ठ लोग । इंद्रवज्रां ब्रुवते=इन्द्रवज्रा कहते हैं ॥

व्याख्या—शोभने जङ्घे यस्याः सा सुजङ्घा, तत्संबुद्धौ हे सुजङ्घे=शोभनोरुयुगले, गत्या=गमनेन, हंसस्य कान्ता हंसकान्ता विलज्जीकृता हंसकान्ता यया सा तत्संबुद्धौ हे विलज्जीकृतहंसकान्ते=मरालिनीमतिलज्जितां कुर्वतीत्यर्थः । यस्यां=वृत्तौ तृतीयं च षष्ठं च सप्तमं च त्रिषट्सप्तमम् अक्षरं=वर्णः तद्वत्=तेनैव प्रकारेण नवमं च=नवमम्प्यक्षरं ह्रस्वं=लघु स्यात्=भवेत् कवीन्द्राः=कविश्रेष्ठाः ताम् इन्द्रवज्रां=एतदभिधां ब्रुवते=कथयन्ति ।

भावार्थ—हे सुन्दर जंघावाली ! चाल में हंसी को भी लज्जित करने वाली हे, सुन्दरी ! जिसमें तीसरा छठा सातवाँ और नवाँ अक्षर ह्रस्व हो उसे श्रेष्ठ कविलोग इन्द्रवज्रा कहते हैं ।

टिप्पणी—यह भी ११ अक्षर के पाद वाला छन्द है वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—'स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः' अर्थात् जिसमें दो तगण ऽऽ।ऽऽ। जगण ।ऽ। और दो गुरु ऽऽ हों वह इन्द्रवजा होती है ।

दूसरा उदाहरण—

S S I S S I I S I S S

गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा रुष्टेन्द्रवज्राहति मुक्तवृष्टौ ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

अर्थ—क्रुद्ध हुए इन्द्र के वज्र प्रहार से भीषण वर्षा होनेपर जिसने बाँये हाथ से गोवर्धन पर्वत को धारण कर गायों और ग्वालों के समूह की रक्षा की वह भगवान् कृष्ण हमारी रक्षा करें ॥

१८. उपेन्द्रवज्रा

S S I S S I I S I S S

यदीन्द्रवज्राचरणेषु पूर्वं भवन्ति वर्णा लघवः सुवर्णे !
अमन्दमाद्यन्मदने ! तदानीमुपेन्द्रवज्रा कथिता कवीन्द्रैः ॥२०॥

अन्वय—सुवर्णे ! अमन्दमाद्यन्मदने यदि इन्द्रवज्राचरणेषु पूर्वे वर्णाः लघवः (स्युः) तदानीं कवीन्द्रैः उपेन्द्रवज्रा कथिता ॥

पदार्थ—सुवर्णे=सुन्दर (गौर) वर्णवाली, अमन्दमाद्यन्मदने=अत्यन्त-कन्दर्पशालिनि ! इन्द्रवज्राचरणेषु=इन्द्रवज्रा छन्द के पादों में, । पूर्वे = प्रथम वर्ण । लघवः=लघु हों । तदानीं=तब, कवीन्द्रैः=कविश्रेष्ठों से, उपेन्द्रवज्रा कथिता=उपेन्द्रवज्रा कही गई है ।

व्याख्या—शोभनः वर्णः यस्याः सा सुवर्णा तत्संबुद्धौ हे सुवर्णे=सुकान्ते, न मन्दम् अमन्दं=अत्यन्तं माद्यन्=हृष्यन् मदनः=कामः यस्याः सा अमन्द-माद्यन्मदना तत्संबुद्धौ हे अमन्दमाद्यन्मदने=अतिशयकन्दर्पशालिनि ! यदि इन्द्रवज्राचरणेषु=इन्द्रवज्रावृत्तस्य चतुर्ष्वपि पादेषु, पूर्वे वर्णाः=प्रथमाक्षराणि लघवः=ह्रस्वाःस्युः तदानीं कवीन्द्रैः सा उपेन्द्रवज्रा कथिता ।

भावार्थ—पूर्वोक्त इन्द्रवज्रा छन्द के चारों चरणों में यदि प्रथम वर्ण लघु हो तो वह उपेन्द्रवज्रा छन्द कहलाता है ।

टिप्पणी—यह भी ११ अक्षर के पाद का ही छन्द है, इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरणमें तीसरा छठा सातवाँ और नौवाँ अक्षर ह्रस्व होता है इसमें उनके साथ ही

प्रथम अक्षर भी ह्रस्व होता है, वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ" अर्थात् उपेन्द्रवज्रा में जगण । ऽ । तगण ऽ ऽ । जगण । ऽ । और दो गुरु ऽ ऽ होते हैं ।

अन्य उदाहरण—

। ऽ ।   ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

उपेन्द्र ! वज्रादिमणिच्छटाभिर्विभूषणानां छुरितं वपुस्ते ।
स्मरामि गोपीभिरुपास्यमानं सुरद्रुमूले मणिमण्डपस्थम् ॥

अर्थ—हे उपेन्द्र ! (श्रीकृष्ण) आभूषणों में जड़े हुए वज्र (हीरा) आदि मणियों की कान्ति से चमकते हुए, गोपियों से उपास्यमान, कल्पद्रुम की जड़ में मणिमण्डप पर बैठे हुए आपकी देह का स्मरण करता हूँ ॥

१९. उपजाति

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

यत्र द्वयोरप्यनयोस्तु पादा भवन्ति सीमन्तिनि चन्द्रकान्ते ।
विद्वद्भिराद्यैः परिकीर्तिता सा प्रयुज्यतामित्युपजातिरेषा ॥२१॥

अन्वय—हे सीमन्तिनि चन्द्रकान्ते यत्र अनयोः द्वयोः अपि पादाः भवन्ति सा एषा आद्यैः विद्वद्भिः परिकीर्तिता उपजातिः इति प्रयुज्यताम् ॥

पदार्थ—सीमन्तिनि=सुन्दर केशविन्यास वाली ! चन्द्रकान्ते=चन्द्रमा जैसी कान्तिवाली । यत्र=जिसमें । अनयोः द्वयोरपि=इन दोनों (इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा) के । पादाः भवन्ति=चरण होते हैं । सा एषा-ऐसी यह । आद्यैः विद्वद्भिः=प्राचीन विद्वानों द्वारा । परिकीर्तिता=कही गई । उपजातिः इति=उपजाति इस नाम से, प्रयुज्यताम्=प्रयोग करें ॥

व्याख्या—सीमन्तः अस्याः अस्तीति सीमन्तिनी तत्संबुद्धौ हे सीमन्तिनि=विन्यस्तकेशपाशे ! चन्द्रस्य कान्तिरिव कान्तिर्यस्याः सा चन्द्रकान्तिः तत्संबुद्धौ हे चन्द्रकान्ते=इन्दुशोभे यत्र=यस्मिन्वृत्ते अनयोः=पूर्वोक्तयोः द्वयोः=इन्द्रवज्रोपेन्द्रवज्रयोः अपि पादाः=चरणाः भवन्ति सा एषा आद्यैः=प्राचीनैः

विद्वद्भि।=पण्डितैः परिकीर्तिता=कथिता उपजातिः इति=उपजातिरित्यभिधया प्रयुज्यताम्=कथ्यताम् ॥

भावार्थ—हे व्यवस्थित केशोंवाली ! हे चन्द्र के समान कान्तिवाली ! जिस छन्द में पूर्वोक्त इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा इन दोनों छन्दों के लक्षणयुक्त चरण हों उसे प्राचीन विद्वानों ने उपजाति कहा है ।

टिप्पणी—यह भी ११ अक्षर के पाद वाला छन्द है, इसमें कौन चरण इन्द्रवज्रा के हों कौन उपेन्द्रवज्रा के यह कोई नियम नहीं है, यदि पहले दोनों चरण इन्द्रवज्रा के दूसरे दोनों उपेन्द्रवज्रा के या प्रथम तृतीय इन्द्रवज्रा के और द्वितीय चतुर्थ उपेन्दवज्रा के हों तो उसे आख्यानकी और इसके विपरीत होनेपर विपरीताख्यानकी कहते हैं । अन्य ग्रन्थकारों ने केवल इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा ही नहीं प्रत्युत इन्द्रवंशा-वंशस्थ आदि के अन्य इस प्रकार के मिश्रित चरणों वाले छन्द को भी उपजाति ही माना है । जैसा कि वृत्तरत्नाकर का लक्षण है—

S S I S S I I S I S S   S S I S S I I S I S S

अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।

S S I S S I I I I S I I S I S S I I S I S S

इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥

अर्थ—इसके पूर्व जो (इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा) कहे गये हैं उन दोनों छन्दों के लक्षणों से युक्त जिसके चरण हों वह उपजाति कहलाती है, इस प्रकार अन्य छन्दों के लक्षणयुक्त चरणों का जहाँ भी मिश्रण हो वहाँ उपजाति ही नाम होगा ।

अन्तरोदीरित० इस पद्यमें प्रथम और चतुर्थ चरण उपेन्द्रवज्रा का है द्वितीय और तृतीय इन्द्रवज्रा का ॥

आख्यानकी-विपरीताख्यानकी

S S I S S   I I S I S S I S I S S I I S I S S

आख्यानकी स्यात् प्रकटी कृतार्थे यदीन्द्रवज्राचरणः पुरस्तात् ।
उपेन्द्रवज्राचरणस्ततोऽन्या मनीषिणोक्ता विपरीतपूर्वा ॥२२॥

अन्वय--प्रकटीकृतार्थे । यदि पुरस्तात् इन्द्रवज्राचरण: तत: उपेन्द्रवज्रा चरण: स्यात् (सा) मनीषिणा आख्यानकी उक्ता अन्या विपरीतपूर्वा (उक्ता) ।

पदार्थ--प्रकटीकृतार्थे = अभिप्रायको स्पष्ट करनेवाली, यदि पुरस्तात्= पहले । तत:=उसके बाद । मनीषिणा = विद्वानों द्वारा, आख्यानकी उक्ता= आख्यानकी कही गई है । अन्या = दूसरी । विपरीतपूर्वा=विपरीत शब्द जिसके पूर्व में हो अर्थात् विपरीताख्यानकी है ।

व्याख्या--अप्रकट: प्रकट: कृत: इति प्रकटीकृत: प्रकटीकृत: अर्थ: यया यस्यै वा सा प्रकटीकृतार्था संबुद्धौ हे प्रकटीकृतार्थे=स्फुटीकृताभिप्राये यदि पुरस्तात्=पूर्वं इन्द्रवज्रायाः चरणः=पादः ततः=तदनन्तरम् उपेन्द्रवज्राचरणः स्याच्चेत् सा मनीषिणा = विदुषा आख्यानकी उक्ता अन्या=तदितरा पूर्वमुपेन्द्र-वज्राचरणस्तत इन्द्रवज्राचरण: स्याच्चेदित्यर्थ: सा विपरीतं = विपरीतपदं पूर्वं यस्या: सा विपरीतपूर्वा = विपरीताख्यानकीत्यर्थ: ।

भावार्थ--हे स्पष्ट अभिप्रायवाली ! यदि पहले इन्द्रवज्रा का चरण हो बाद में उपेन्द्र वज्रा का चरण हो तो उसे आख्यानकी कहते हैं और पहले उपेन्द्रवज्रा का बाद में इन्द्रवज्रा का चरण हो तो वह विपरीताख्यानकी कहलाती है ।

टिप्पणी--यह स्वतन्त्र छन्द नहीं है, उपजाति के ही दो प्रकार बताये हैं मूल में "उपेन्द्रवज्राचरणास्त्रयोऽन्या' यह पाठ मानकर टीकाकारों ने मनमाने अर्थ किये हैं जो उपयुक्त नहीं हैं । वास्तव में ग्रन्थकार का अभिप्राय है--इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा के चरणों का परस्पर संमिश्रण उपजाति है । क्योंकि इन्द्र-वज्रा पहले कही गई है अत: उसके चरण पहले हों तो आख्यानकी, और उपेन्द्रवज्रा बाद में कही गई है उसके चरण पहले हों तो बिपरीताख्यानकी कही जायगी छन्द उपजाति ही रहेगा । वस्तुत: कौन-कौन चरण इन्द्रवज्रा या उपेन्द्रवज्रा के हों यह कोई नियम नहीं है इसीलिये "वाणीभूषण" ग्रन्थ में इसके १४ प्रकार गिनाये हैं, और 'प्राकृतपिंगल" में इन चौदहों के अलग-अलग नाम दिये हैं ।

अन्य उदाहरण—

इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा

S S I S S I I S I S S I S I I S I I S I S S

भृङ्गावली मङ्गलगीतनादैर्जनस्य चित्ते मुदमादधाति ।
आख्यानकी न स्मर जन्मवार्ता-महोत्सवस्याम्रवणं क्वणन्ती ॥

अर्थ—आम के वनों में बौरपर गुञ्जार करती हुई भौंरों की पंक्ति मङ्गल-गीत गाती हुई सी लोगों के हृदय में कामदेव के जन्मोत्सव की कथा कह रही है ॥

२०. रथोद्धता

S I S I I I S I S I S

आद्यमक्षरमतस्तृतीयकं सप्तमं च नवमं तथान्तिमम् ।
दीर्घमिन्दुमुखि यत्र जायते तां वदन्ति कवयो रथोद्धताम् ॥२३॥

अन्वय—इन्दुमुखि यत्र आद्यम् अतः तृतीयकं सप्तमं नवमं तथा अन्तिमम् अक्षरम् दीर्घं जायते कवयः तां रथोद्धतां वदन्ति ।

पदार्थ—इन्दुमुखि=चन्द्रमा जैसे मुखवाली । यत्र=जिसमें । आद्यं=पहला तृतीयकं=तीसरा । सप्तमं=सातवाँ । नवमं=नौवां । तथा अन्तिमं च=और अन्तिम (ग्यारहवाँ) भी । दीर्घं जायते=दीर्घ होता है । तां=उसे कवयः=विद्वान् लोग । रथोद्धतां वदन्ति=रथोद्धता कहते हैं ।

व्याख्या—इन्दुरिव मुखं यस्याः सा इन्दुमुखी संबुद्धौ हे इन्दुमुखि=चन्द्रवदने यत्र=छन्दसि आद्यं=प्रथमं अतः परं तृतीयकं सप्तमं नवमं तथा अन्तिमम्=एकादशं च अक्षरं=वर्णः दीर्घं=गुरु जायते=भवति कवयः=विद्वांसः तां रथोद्धतां=रथोद्धताख्यां वदन्ति=कथयन्ति ।

भावार्थ—हे चन्द्रवदने ! जिसमें पहला, तीसरा, सातवाँ, नौवां और अन्तिम (ग्यारहवाँ) अक्षर गुरु हो उसे कविगण रथोद्धता कहते ।

टिप्पणी—यह भी ११ अक्षर के पाद का छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षणहै—"रान्नराविह रथोद्धता लगौ" अर्थात् जिसमें रगण ऽ।ऽ नगण ।।। रगण ऽ।ऽ तथा एक-एक लघु । गुरु ऽ हो वह रथोद्धता है।

अन्य उदाहरण—

ऽ । ऽ ।।।ऽ।ऽ। ऽ

राधिका दधिविलोडनस्थिता कृष्णवेणुनिनदैरथोद्धता।
यामुनं तटनिकुञ्जमञ्जसा सा जगाम सलिलाहृतिच्छलात्॥

अर्थ—दही मथने में लगी राधिका, कृष्ण की वंशीध्वनि से उन्मत्त सी हुई पानी भरने के बहाने सहसा यमुना किनारे कुञ्ज में चली गई॥

२१. स्वागता

ऽ । ऽ । ।। ऽ ।। ऽ ऽ

अक्षरं च नवमं दशमं चेद् व्यत्ययाद् भवति यत्र विनीते।
प्रोक्तमेणनयने! यदि सैव स्वागतेति कविभिः कथिता सौ॥२५॥

अन्वय—विनीते एणनयने यत्र प्रोक्तं नवमं दशमं च अक्षरं यदि व्यत्ययात् भवति चेत् सा एव असौ कविभिः स्वागता इति कथिता।

पदार्थ—विनीते=विनययुक्त। एणनयने=मृगनयनी। यत्र = जिसमें। प्रोक्तं (रथोद्धता में) कहा हुआ। नवमं दशमं च अक्षरं=नौवाँ और दशवाँ अक्षर। व्यत्ययाद्=विपरीतरूप से (गुरु के स्थान पर लघु और लघु के स्थान पर गुरु) हो तो। सैव असौ=वही (रथोद्धता) यह। स्वागतेति कथिता=स्वागता नाम से कही गई है।

व्याख्या—हे विनीते=विनम्रे! एणस्य=मृगस्य नयने इव नयने यस्याः सा एणनयना संबुद्धौ हे एणनयने=मृगाक्षि यत्र=छन्दसि प्रोक्तं=कथितं रथोद्धतेयमिति शेषः। नवमं दशमं च अक्षरं यदि व्यत्ययात्=वैपरीत्यात् क्रमेणलघुगुरुरूपमित्यर्थः भवति चेद् सा=रथोद्धता एव असौ=इयं स्वागता इति=स्वागता नाम्ना कथिता।

भावार्थ—हे विनीते। हे मृगाक्षि। यदि रथोद्धता में कहे हुए नवम और दशम अक्षर विपरीत क्रम से हो जाँय तो उसे स्वागता कहते हैं। (रथोद्धता में नवम अक्षर गुरु और दशम लघु कहा है स्वागता में नवम अक्षर लघु और दशम गुरु हो जायगा)

टिप्पणी—यह भी ११ अक्षर के पाद का छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"स्वागतेतिरनभाद् गुरुयुग्मम्" अर्थात् रगण ऽ।ऽ नगण ।।। भगण ऽ।। और दो गुरु हों तो स्वागता छन्द होता है।

अन्य उदाहरण—

ऽ। ऽ। । ।ऽ ।।ऽऽ

यस्य चेतसि सदा मुरवैरी बल्लवीजनविलासविलोलः।

तस्य नूनममरालयभाजः स्वागतावरकरः सुरराजः॥

अर्थ—गोपीजनों के विलास से चञ्चल मुरारि (श्रीकृष्ण) सदा जिसके चित्त में रहते है वह यदि स्वर्ग में जाता है तो देवराज इन्द्र उसका स्वयं आदर करते हैं।

२२. वैश्वदेवी

ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽऽ। ऽ ऽ

ह्रस्वो वर्णः स्यात् सप्तमो यत्र बाले तद्वद्बिम्बोष्ठि ! न्यस्त एकादशाद्यः
बाणैर्विश्रामस्तत्र चेत् स्यात्तुरंगैर्नाम्ना निर्दिष्टा सुभ्रु सा वैश्वदेवी॥

अन्वय—बाले ! बिम्बोष्ठि ! सुभ्रु ! यत्र सप्तमः वर्णः ह्रस्वः स्यात् तद्वत् एकादशाद्यः न्यस्तः (स्यात्) बाणैः तुरङ्गैः विश्रामः स्यात् चेत् सा नाम्ना वैश्वदेवी निर्दिष्टा।

पदार्थ—बाले=भोली-भाली। बिम्बोष्ठि=बिम्बफल जैसे लाल लाल ओठों वाली। सुभ्रु=सुन्दर भौहों वाली। यत्र=जिसमें। सप्तमः वर्णः ह्रस्वः स्यात्=सातवाँ अक्षर ह्रस्व हो। तद्वत्=उसी प्रकार। एकादशाद्यः=ग्यारहवें से पहला (अर्थात् दशवाँ) न्यस्तः=रखा जाय। बाणैः=पाँच, तुरङ्गैः=

सात (अक्षरों) से । विश्राम: चेत्=विराम हो तो, सा=वह । नाम्ना=नाम से । वैश्वदेवी निर्दिष्टा=वैश्व देवी कही है ।

व्याख्या—हे बाले = मुग्धे । बिम्बवत् ओष्ठौ यस्याः सा बिम्बोष्ठी तत्संबुद्धौ हे बिम्बोष्ठि=बिम्बाधरे सुष्ठु भ्रुवौ यस्याः सा सुभ्रूः संबुद्धौ हे सुभ्रु यत्र सप्तमः वर्णः ह्रस्वः=लघुः स्यात् तद्वत्=तथैव एकादशस्य आद्यः एकादशाद्यः=एकादशात् पूर्ववर्ती दशमो वर्ण इत्यर्थः न्यस्तः=ह्रस्वः स्थापित इति भावः । बाणैः=पञ्चभिः तुरङ्गैः=सप्तभिश्च वर्णैः विश्रामः=विरामः स्याच्चेत् सा नाम्ना=अभिधानेन वैश्वदेवी इति निर्दिष्टा = कथिता ।

भावार्थ—हे सुन्दरि ! जहाँ सातवाँ अक्षर ह्रस्व हो उसी प्रकार ग्यारहवें से पहला (अर्थात्) दसवाँ वर्ण भी (ह्रस्व) रखा जाय, पाँच और सात अक्षरों पर विराम हो तो उसे वैश्वदेवी नाम से कहा गया है ।

टिप्पणी—यह १२ अक्षर के पाद का छन्द है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"बाणाश्वैश्छिन्ना वैश्वदेवी ममौयौ" अर्थात् पाँच और सात अक्षरों से विराम वाली मगण ऽऽऽ मगण ऽऽऽ यगण ।ऽऽ यगण ।ऽऽ वाली वैश्वदेवी होती है ।

अन्य उदाहरण—

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ

धन्यः पुण्यात्मा जायते क्वापि वंशे तादृक्पुत्रोऽसौ येन गोत्रं पवित्रम् ।
गोविप्रज्ञातिस्वामिकार्ये प्रवृत्तः शुद्धःश्राद्धादौ वैश्वदेवी भवेद्यः ।।

अर्थ—धन्य और पुण्यात्मा पुत्र किसी विरले ही वंश में उत्पन्न होता है वह ऐसा है जिससे सारा कुल ही पवित्र हो जाता है जो गौ ब्राह्मण, बन्धु और अपने स्वामी के कार्य में लगा रहता है और श्राद्धादि कर्मों में शुद्ध होकर वैश्वदेव विधि करता है ।।

२३. तोटक

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

सतृतीयकषष्ठमनङ्गरते ! नवमं विरतिप्रभवं गुरु चेत् ।
घनपीनपयोधरभारनते ! ननु तोटकवृत्तमिदं कथितम् ।।२७।।

अन्वय—अनङ्गरते ! घनपीनपयोधरभारनुते ! सतृतीयकषष्ठं नवमं विरतिप्रभवं गुरु चेत् ननु इदं तोटकवृत्तं कथितम् ।

पदार्थ—अनङ्गरते=कामशीले । घनपीनपयोधरभारनते = घने और स्थूल स्तनों के भार से झुकी हुई । सतृतीयकषष्ठं=तीसरे सहित छठा (वर्ण) । नवमं=नौवाँ । विरति-प्रभवं=विराम में होने वाला अर्थात् अन्तिम (बारहवाँ) । गुरु चेत्=गुरु हो तो । ननु=निश्चय ही । इदं=यह । तोटकवृत्तं । कथितम्= तोटक छन्द कहा जाता है ।

व्याख्या—अनङ्गे रतिः यस्याः सा अनङ्गरतिः संबुद्धौ हे अनङ्गरते != हे कामशीले, घनौ पीनौ च यौ पयोधरौ घनपीनपयोधरौ तयोः भारेण नता तत्संबुद्धौ हे घनपीनपयोधरभारनते=निविडस्थूलस्तनभारनम्रे ! तृतीयमेव तृतीयकं तृतीयकेन सहितं सतृतीयकं सतृतीयकं च तत् षष्ठं च सतृतीयकषष्ठं= तृतीयं षष्ठं च वर्णमित्यर्थः नवमं विरतिः प्रभवः यस्य तत् विरतिप्रभवं= विश्रामस्थानम् अन्तिममितिभावः अक्षरं गुरु=दीर्घः स्याच्चेत् ननु=निश्चयेन इदं तोटकवृत्तं=तोटकाख्यं छन्दः कथितम्=उक्तम् ।

भावार्थ—हे कामरते । हे घने और स्थूल स्तनभार से झुकी हुई ! यदि तीसरे अक्षर के साथ छठा, नौवाँ तथा विराम करनेवाला (अन्तिम) अक्षर गुरु हो तो यह तोटक नामक छन्द कहा जाता है ।

टिप्पणी—यह भी १२ अक्षर के पाद का छन्द है, वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्" प्रत्येक पाद में चार सगणों ।।S।।S।।S।।S वाला तोटक छन्द होता है ।

अन्य उदाहरण—

। ।S । ।S । ।S । । S

यमुनातटमच्युतकेलिकला लसदङ्घ्रिसरोरुहसङ्गरुचिम् ।
मुदितोऽट कलेरपनेतुमघं यदिचेच्छसि जन्म निजं सफलम् ।।

अर्थ—यदि कलि के पाप को दूर कर अपने जन्म को सफल करना चाहते हो तो भगवान् कृष्ण की क्रीडाओं में उनके सुन्दर चरण कमलों के संयोग से पवित्र यमुना के तट पर प्रसन्न होकर भ्रमण करो ।।

२४. भुजङ्गप्रयात

S S । S S । S S । S S

यदाद्यं चतुर्थं तथा सप्तमं स्यात् तथैवाक्षरं ह्रस्वमेकादशाद्यम् ।
शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दे! तदुक्तं कवीन्द्रैर्भुजङ्गप्रयातम् ॥२७॥

अन्वय—शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दे ! यदा आद्यं, चतुर्थं तथा सप्तमं तथैव एकादशाद्यम् अक्षरं ह्रस्वं स्यात् तत् कवीन्द्रैः भुजङ्गप्रयातम् उक्तम् ।

पदार्थ—शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दे=शरत्कालीनचन्द्रमा से स्पर्धा करने वाले मुखकमलवाली । यदा=जब । आद्यं=प्रथम । सप्तमं=सातवाँ । तथैव=उसी प्रकार एकादशाद्यं=ग्यारहवें से पहला (दसवाँ) । अक्षरं=वर्ण । ह्रस्वं स्यात्=ह्रस्व हो तो । तद्=उसे ; कवीन्द्रैः=विद्वानों ने । भुजङ्गप्रयातम् उक्तम्=भुजङ्गप्रयात कहा है ।

व्याख्या—शरदः चन्द्रः शरच्चन्द्रः शरच्चन्द्रं विद्वेष्टीति शरच्चन्द्रविद्वेषि वक्त्रमेवारविन्दं वक्त्रारविन्दं शरच्चन्द्रविद्वेषि वक्त्रारविन्दं यस्याः सा तत्सम्बुद्धौ हे शरच्चन्द्रविद्वेषिवक्त्रारविन्दे=शारदेन्दुसंस्पर्द्धिमुखकमले, यदा आद्यं=प्रथमं चतुर्थं तथा सप्तमं तथैव=तेनैवप्रकारेण एकादशस्य आद्यमेकादशाद्यं=एकादशात् पूर्ववर्ति दशममित्यर्थः अक्षरं=वर्णः ह्रस्वं=लघु स्यात् तद्=वृत्तं कवीन्द्रैः=बुधैः भुजङ्गप्रयातं=एतदाख्यम् उक्तम्=कथितम् ।

भावार्थ—हे शरच्चन्द्र से अधिक सुन्दर मुखकमलवाली ! जब पहला, चौथा, सातवाँ तथा दसवाँ अक्षर ह्रस्व हो तो उसे विद्वान् भुजङ्गप्रयात छन्द कहते हैं ।

टिप्पणी—यह भी १२ अक्षर के पाद का छन्द है, वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"भुजङ्गप्रयातं भवेद् यैश्चतुर्भिः" चार यगण । S S । S S । S S । S S होने पर भुजङ्गप्रयात छन्द होता है ।

अन्य उदाहरण—

ISSISSI SSISS

पुरः साधुवद् वक्ति मिथ्याविनीतः
परोक्षे करोत्यर्थनाशं हताशः।
भुजङ्गप्रयातोपमं यस्य चित्तं
त्यजेत्तादृशं दुश्चरित्रं कुमित्रम्॥

अर्थ—जो सामने होनेपर सज्जन की तरह बनावटी नम्रता दिखाता है और परोक्ष में कार्य हानि करता है, जिसका चित्त सर्प की चाल जैसा कुटिल है ऐसे दुश्चरित्र कुत्सित मित्र को छोड़ देना चाहिये॥

२५. द्रुतविलम्बित

II ISII SIISIS

अयि कृशोदरि यत्र चतुर्थकं गुरु च सप्तमकं दशमं तथा।
विरतिगं च तथैव विचक्षणैः द्रुतविलम्बितमित्युपदिश्यते॥२६॥

अन्वय—अयि कृशोदरि यत्र चतुर्थकं सप्तमकं दशमं च गुरु तथैव विरतिगं च (गुरु) विचक्षणैः द्रुतविलम्बितम् इत्युपदिश्यते।

पदार्थ—अयि कृशोदरि=हे पतली कमरवाली। यत्र=जिसमें। चतुर्थकं=चौथा। सप्तमकं=सातवाँ। दशमं=दसवाँ। तथैव=उसी प्रकार। विरतिगं=अन्तिम (बारहवाँ) वर्ण। गुरु=दीर्घ हो। विचक्षणैः=विद्वानों ने। (उसे) द्रुतविलम्बितमिति=द्रुतविलम्बित ऐसा। उपदिश्यते=कहा है।

व्याख्या—कृशम् उदरं यस्याः सा कृशोदरी संबुद्धौ अयि कृशोदरि=हे सुमध्यमे यत्र=छन्दसि चतुर्थमेव चतुर्थकं सप्तममेव सप्तमकं तथा दशमं तथैव=तेनैव प्रकारेण विरतौ=विश्रामे गतं विरतिगं=अन्तिमं द्वादशमितियावत्। चतुर्थसप्तमदशमद्वादशाक्षराणीति भावः। गुरु=दीर्घं भवेत्तत् विचक्षणैः=विद्वद्भिः, द्रुतविलम्बितम् इति=द्रुतविलम्बितनाम्ना उपदिश्यते=कथ्यते।

भावार्थ—हे कृशोदरि जिसमें चौथा सातवाँ दसवाँ तथा बारहवाँ अक्षर दीर्घ हो उसे विद्वान् लोग द्रुतविलम्बित कहते हैं।

टिप्पणी—यह भी १२ अक्षर के पाद का छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ" अर्थात् जिसमें नगण ।।। भगण ऽ।। भगण ऽ।। और रगण ऽ।ऽ हो उसे द्रुतविलम्बित कहते हैं।

अन्य उदाहरण—

।।।ऽ।।ऽ । ।ऽ । ऽ

इतरपापफलानि यदृच्छया विलिखितानि सहे चतुरानन।
अरसिकेषु कवित्वविनोदनं शिरसि मा लिख मा लिख मा लिख॥

अर्थ—हे विधाता ! अन्य पापों के फल आप जिसके ललाट पर स्वेच्छा से चाहे जो भी लिख दें मैं सह लूँगा किन्तु अरसिक व्यक्तियों के ललाट पर कविता से खेलवाड़ करना मत लिखो मत लिखो मत लिखो।

२६. प्रमिताक्षरा

। ।ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽ

यदि तोटकस्य गुरु पञ्चमकं विहितं विलासिनि ! तदक्षरकम्।
रससंख्यकं गुरु न चेदबले ! प्रमिताक्षरेति कविभिःकथिता॥२०॥

अन्वय—हे विलासिनि ! हे अबले ! यदि तोटकस्य पंचमकम् अक्षरकम् । गुरु रससंख्यकं च न चेद् गुरु (सा) कविभिः प्रमिताक्षरा इति कथिता।

पदार्थ—विलासिनि=विलासशीले ! अबले=कोमले यदि तोटकस्य= तोटक छन्द का, पंचमकं अक्षरकं=पाँचवाँ अक्षर। गुरु=दीर्घ (हो), रस-संख्यकं=छठा (अक्षर), गुरु न चेद्=गुरु न हो, (तो) कविभिः= विद्वानों ने (उसे) प्रमिताक्षरा कथिता=प्रमिताक्षरा कहा है :

व्याख्या—विलासोऽस्या अस्तीति विलासिनी संबुद्धौ हे विलासिनि= विभ्रमशीले ! न बलं यस्याः सा अबला संबुद्धौ हे अबले=कोमले इत्यर्थः यदि तोटकस्य=पूर्वमुक्तस्य छन्दसः पञ्चममेव पञ्चमकं=पञ्चमाक्षरं गुरु=दीर्घं भवेत् तथा रससंख्या यस्य तत् रससंख्यकं=षष्ठमक्षरमितियावत् गुरु न चेद्= दीर्घं न भवेत् चेत् सा कविभिः=विद्वद्भिः प्रमिताक्षरा इति कथिता=प्रमि-ताक्षरेति नाम्ना गदिता।

भावार्थ—यदि तोटकछन्द में पाँचवाँ अक्षर गुरु हो और छठा गुरु न रहे तो उसे प्रमिताक्षरा कहते हैं।

टिप्पणी—यह भी १२ अक्षर के पाद का छन्द है, तोटक के लक्षण में चार सगण हो रहे हैं ।।S ।।S ।।S ।।S इसमें पाँचवाँ वर्ण लघु छठा गुरु होता है। इसी में यदि पाँचवां गुरु और छठा लघु कर दें तो प्रमिताक्षरा हो जायगी। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"प्रमिताक्षरा सजससैः कथिता" सगण ।।S जगण ।S। सगण ।।S सगण ।।S जिसमें हों वह प्रमिताक्षरा होती है।

अन्य उदाहरण—

। । S । S । । । S । । S

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ विफलत्वमेति बहु साधनता।
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्न पतिष्यतः करसहस्रमपि ।।

अर्थ—जब भाग्य अनुकूल नहीं होता तो बहुत साधन सम्पन्न होना भी व्यर्थ होता है, सूर्य जब अस्ताचल में गिरने लगता है तो सहस्र कर (बाहु-किरणें) भी उसे सहारा नहीं दे पाते।

२७. हरिणीप्लुता

। । S । । S । । S । S । । । S । । S । । S

प्रथमाक्षरमाद्यतृतीययोर्द्रुतविलम्बितकस्य च पादयोः।
यदि चेन्न तदा कमलेक्षणे! भवति सुन्दरि सा हरिणीप्लुता ।।३१।।

अन्वय—कमलेक्षणे सुन्दरि यदि द्रुतविलम्बितकस्य आद्यतृतीययोः पादयोः प्रथमाक्षरं न चेत् तदा सा हरिणीप्लुता भवति।

पदार्थ—कमलेक्षणे=कमल जैसी आँखों वाली। यदि द्रुतविलम्बितकस्य= द्रुतविलम्बित छन्द के। आद्यतृतीययोः पादयोः=पहले और तीसरे चरणका, प्रथमाक्षरं=पहला अक्षर। न चेत्=न हो तो। सा=वह। हरिणीप्लुता (होती है।)

व्याख्या—कमले इव ईक्षणे यस्याः सा कमलेक्षणा संबुद्धौ हे कमलेक्षणे= कमललोचने ! सुन्दरि ! यदि द्रुतविलम्बितमेव द्रुतविलम्बितकम्, तस्य, द्रुतविलम्बितकस्य=एतन्नामकस्य छन्दसः आद्यश्च तृतीयश्च आद्यतृतीयौ तयोः आद्यतृतीययोः=प्रथमतृतीययोः पादयोः=चरणयोः प्रथमं च तदक्षरं प्रथमा-क्षरं=आद्यो वर्णः न चेत्=न स्यात् तदा सा हरिणीप्लुता=एतदाख्या भवति ।

भावार्थ—हे कमलनेत्रे सुन्दरि। यदि द्रुतविलम्बित छन्द के प्रथम और तृतीय चरणों में प्रथमाक्षर न रहे तो वह हरिणीप्लुता छन्द होता है ।

टिप्पणी—इस छन्द का द्वितीय और चतुर्थ पाद तो द्रुतविलम्बित का ही रहता है किन्तु प्रथम और तृतीय पाद में एक (पहला) अक्षर कम हो जाता है, अतः पहला और तीसरा पाद ११ अक्षर का तथा दूसरा-चौथा १२ अक्षर का होता है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—

"सयुगात् सलघू विषमे गुरुर्युजि नभौ भरकौ हरिणीप्लुता"

अर्थात् जिसके विषम (१, ३) चरणों में सगण ।।ऽ सगण ।।ऽ सगण ।।ऽ लघु । और गुरु ऽ हो तथा सम (२, ४) पादों में न ।।। भ ऽ।। भ ऽ।। र ऽ।ऽ हो वह हरिणीप्लुता है ।

अन्य उदाहरण—

।।ऽ।।ऽ ।।ऽ।ऽ ।।।ऽ।।ऽ ।।ऽ।ऽ

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता वलिमनोज्ञतटा तरणेः सुता ।
कलहंसकुलारवशालिनी विहरतो हरतिस्म हरेर्मनः ।।

अर्थ—स्पष्ट फेन-समूह वाली, हरिण की तरह उछलती तरङ्गों वाली, हरी घास से अत्यन्त मनोहर तटों वाली और कलहंसों के समूहों की ध्वनि से शोभित सूर्यसुता (यमुना) विहार करते हुए श्रीकृष्ण के मन को हर ली ।

२८. वंशस्थविल (वंशस्थ)

।ऽ ।ऽऽ ।।ऽ। ऽ। ऽ

उपेन्द्रवज्राचरणेषु सन्ति चेदुपान्त्यवर्णा लघवः कृता यदा।
मदोल्लसद्भ्रूजितकामकार्मुके! वदन्ति वंशस्थविलं बुधास्तदा ३२

अन्वय—मदोल्लसद्भ्रूजितकामकार्मुके! यदा उपेन्द्रवज्राचरणेषु (ये) उपान्त्यवर्णाः सन्ति ते लघवः कृताः चेत् तदा बुधाः इदं वंशस्थविलं वदन्ति।

पदार्थ—मदोल्लस ··कार्मुके=मद से उल्लसित अपनी भौंहों से काम के धनुष को जीतने वाली। उपेन्द्रवज्राचरणेषु=उपेन्द्रवज्रा छन्द के प्रत्येक पाद में। सन्ति=(जो वर्ण) हैं (वे) यदा=जब, उपान्त्यवर्णाः=अन्त्यके समीप के वर्ण (और) लघवः=ह्रस्व। कृताः=कर दिये जाँय, तदा=तब, बुधाः=विद्वान् लोग। इदं=इसे। वंशस्थ विलं वदन्ति=वंशस्थ विल कहते हैं।

व्याख्या—मदेन उल्लसन्त्यौ मदोल्लसन्त्यौ, मदोल्लसन्त्यौ च ते भ्रुवौ मदोल्लसद्भ्रुवौ ताभ्यां जितं कामस्य कार्मुकं यया सा तत्संबुद्धौ हे मदोल्लसद्भ्रूजितकामकार्मुके=यौवनमदेन विजृम्भितभ्रूयुगलतिरस्कृतस्मरचापे! उपेन्द्रवज्राचरणेषु=उपेन्द्रवज्राछन्दसः पादेषु ये अन्त्यवर्णाः सन्ति ते, अन्त्यस्य समीपे वर्तन्ते इति उपान्त्याः उपान्त्याश्च ते वर्णाः उपान्त्यवर्णाः=अन्त्यस्य समीपवर्तिनो वर्णाः लघवः=ह्रस्वाश्च कृताः=विहिताः अन्त्यवर्णादनन्तरमेकं वर्णं स्थाप्य पूर्वं वर्णं लघु कृत्वा चेत्यर्थः। तदा बुधाः=विद्वांसः वंशस्थविलं=एतदाख्यं छन्दः वदन्ति।

भावार्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण के अन्तिमवर्ण को उपान्त्य (अन्त के समीप का) वर्ण बनाकर (अर्थात् उसके आगे एक वर्ण और लगाकर) लघु कर दिया जाय तो उसे विद्वान् लोग वंशस्थविल छन्द कहते हैं।

टिप्पणी—उपेन्द्रवज्रा ११ अक्षरों के पाद का छन्द है वंशस्थ १२ अक्षरों का। इसीलिये उपेन्द्रवज्रा के पादान्त्य वर्ण में एक वर्ण जोड़ कर पूर्व वर्ण को लघु और उपान्त्य बना देते हैं। यह लक्षण कुछ अटपटा सा है बिना 'ये वर्णाः' और 'ते' का अध्याहार किये अन्वय नहीं होता। श्रुतबोध और

छन्दोमंजरी कार ने इसे वंशस्थविल और पिंगलसूत्र तथा वृत्तरत्नाकर में 'वंशस्थ' कहा है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—

"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ" जगण ।S। तगण SS। जगण ।S। रगण S।S जिसमें हों वह वंशस्थ कहा गया है।

अन्य उदाहरण—

। S । S S । । S । S । S

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

अर्थ—अन्त से रहित, हजारों रूपों वाले, हजारों पैर-आँख-शिर-जङ्घा और बाहुओं वाले, हजारों नामों वाले, हजारों करोड़ों युगों को धारण करने वाले शाश्वत (चिरंतन) पुराण पुरुष भगवान् को नमस्कार है नमस्कार है॥

२६. इन्द्रवंशा

S S । S S । । S । S । S

यस्यामशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे ! वंशस्थ पादा गुरुपूर्ववर्णकाः।
तारुण्यहेलारतिरङ्गलालसे ! तामिन्द्रवंशां कवयः प्रचक्षते॥३३॥

अन्वय—अशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे। तारुण्यहेलारतिरङ्गलालसे ! यस्यां वंशस्थपादाः गुरुपूर्ववर्णकाः कवयः ताम् इंद्रवंशां प्रचक्षते।

पदार्थ—अशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे=अशोक वृक्ष के अंकुरों जैसे कोमल कर-किसलयों वाली। तारुण्यहेलारतिरङ्गलालसे=यौवन मद से अनायास ही सुरताभिलाष वाली। यस्यां=जिसमें। वंशस्थपादाः=वंशस्थ छन्द के चरण। गुरुपूर्ववर्णकाः=गुरु है पूर्ववर्ण जिनमें ऐसे हों। ताम्=उसे। कवयः=विद्वान् लोग। इंद्रवंशां प्रचक्षते=इंद्रवंशा कहते हैं।

व्याख्या—अशोकस्य=तदाख्यवृक्षविशेषस्य अङ्कुरवत् पाणिपल्लवौ यस्याः सा तत्संबुद्धौ अशोकाङ्कुरपाणिपल्लवे=अशोकप्ररोहवत् कोमलकर-किसलये ! तारुण्यस्य हेला तारुण्यहेला, तारुण्यहेलया रतिरङ्गे लालसा यस्याः सा तत्संबुद्धौ हे तारुण्यहेलारतिरङ्गलालसे=यौवनक्रीड़या सुरताभिलाषिणि !

यस्यां वंशस्थपादाः=वंशस्थवृत्तस्य चरणाः गुरुः पूर्ववर्णको येषां ते गुरुपूर्ववर्णकाः = दीर्घप्रथमाक्षराः भवन्ति कवयः=विद्वांसः ताम् इंद्रवंशां=इंद्रवंशेति नामधेयां वदन्ति ।

भावार्थ—वंशस्थ छन्द के चारों चरणों में यदि प्रथमाक्षर गुरु हो तो उसे इन्द्रवंशा छन्द कहते हैं।

टिप्पणी—यह भी बारह अक्षर के पादका छन्द है, इंद्रवंशा और वंशस्थ के मिश्रण से भी उपजाति छन्द होता है यह उपजाति प्रकरण में बताया गया है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतैः" तगण SSI तगण SSI जगण ISI रगण SIS जिसमें हों वह इंद्रवंशा छंद है।

उदाहरण—

S S I S S I I S I S I S

कुर्वीत यो देवगुरुद्विजन्मनामुर्वीपतिः पातनमर्थलिप्सया।
तस्येन्द्रवंशेऽपि गृहीतजन्मनः संजायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

अर्थ—जो राजा धन की लिप्सा से देवता, गुरु और ब्राह्मण का अपमान करता है वह यदि इंद्र के वंश में भी उत्पन्न हो तो लक्ष्मी उससे रूठ जाती है।

३०. प्रभावती

I S I S I I I I S I S I S

यस्यां प्रिये प्रथमकमक्षरद्वयं तुर्यं तथा गुरु नवमं दशान्तिकम् ।
सान्त्यं भवेद्यदि विरतिर्युगग्रहैः सा लक्षिता ह्यमृतरुते ! प्रभावती ।

अन्वय—प्रिये ! अमृतरुते ! यस्यां प्रथमकम् अक्षरद्वयं तुर्यं नवमं तथा सान्त्यं दशान्तिकं गुरु युगग्रहैः विरतिर्भवेत् सा प्रभावती लक्षिता।

पदार्थ—अमृतरुते=मीठी वाणी वाली। यस्यां=जिसमें। प्रथमकं=आदि के। अक्षरद्वयं=दो अक्षर। तुर्यं=चौथा। नवमं=नौवां। सान्त्यं=अन्तिम (तेरहवें) के सहित, दशान्तिकं=दशवें के बादका (ग्यारहवां) अक्षर,

गुरु=दीर्घ हो । तथा युगग्रहैः=चार और नौ वर्णों पर । विरतिः=विश्राम हो तो । प्रभावती लक्षिता=वह प्रभावती कही गई है ।

व्याख्या—प्रिये=दयिते ! अमृतमिव रुतं यस्याः सा अमृतरुता संबुद्धौ हे अमृतरुते = मधुराक्षरे यस्यां प्रममेव प्रथमकं=आद्यम् अक्षरयोर्द्वयमक्षर-द्वयं=प्रथमं द्वितीयं चाक्षरमित्यर्थः तुर्यं=चतुर्थं नवमं तथा अन्त्येन सहितं सान्त्यं=अन्तिमेन त्रयोदशाक्षरेण सहितं दशानामन्तिकं दशान्तिकं=एकादश-मित्यर्थः गुरु=दीर्घं भवेत्, यदि युगाश्च ग्रहाश्च युगग्रहाः तै युगग्रहैः=चतुर्भिर्नव-भिश्च विरतिः=विश्रामः भवेत् सा प्रभावती=एतदाख्या लक्षिता=निर्दिष्टा ।

भावार्थ—जिसमें आदि के दो अक्षर, चौथा, नौवाँ, ग्यारहवाँ और तेरहवां अक्षर गुरु हो और चार तथा ९ अक्षरों पर यति हो तो उसे प्रभा-वती कहते हैं ।

टिप्पणी—यह तेरह अक्षरों के पाद का छंद है । वृत्तरत्नाकर में यह छंद 'अतिरुचिरा' नाम से है किन्तु उसमें प्रथमाक्षर गुरु नहीं होता, छन्दो-मंजरी में लक्षण और उदाहरण एक ही रूप में दिया है—

SS IS IIII SIS IS

एते क्रमात् त भ स ज संज्ञकाः गणाः
गश्चान्ततो यदि विहिता महोपते ।
वेदैर्ग्रहैर्यदि भवति यतिश्च शोभना
नागाधिपो वदति तदा प्रभावतीम् ॥

अर्थ—यदि क्रम से त SSI भ SII स IIS ज ISI गण और एक गुरु हो तथा ४।९ अक्षरों पर यति हो तो उसे प्रभावती कहते हैं ।

३१. प्रहर्षिणी

S SS IIIIS IIISS

आद्यं चेत् त्रितयमथाष्टमं नवान्त्यं सोपान्त्यं गुरु विरतौ सुभाषिते स्यात् ।
विश्रामो भवति महेशनेत्रदिग्भिर्विज्ञेया ननु सुभगे ! प्रहर्षिणी सा ॥३५॥

अन्वय—सुभाषिते ! सुभगे ! चेत् आद्यं त्रितयं अथ अष्टमं सोपान्त्यं नवान्त्यं विरतौ गुरु स्यात् तथा महेशनेत्रदिग्भिः विश्रामो यदि भवति ननु तदा सा प्रहर्षिणी विज्ञेया ।

पदार्थ—सुभाषिते = सुन्दर वाणी वाली । सुभगे = सौभाग्यशालिनी ! चेत् = यदि । आद्यं = प्रथम । त्रितयं = तीन । अथ = फिर । अष्टमं = आठवाँ । सोपान्त्यं = अन्त्य के समीप वाले (बारहवें) के साथ । नवान्त्यं = नौवें के बाद का (दशवाँ) । विरतौ = अन्त में (भी) । गुरु स्यात् = गुरु हो । महेशनेत्र = तीन (तथा) दिग्भिः = दस पर । विश्रामो भवति = विराम होता है । तदा = तब । ननु = निश्चय ही । सा प्रहर्षिणी विज्ञेया = उसे प्रहर्षिणी जानना चाहिये ।

व्याख्या—सुष्ठु भाषितं यस्याः सा सुभाषिता संबुद्धौ हे सुभाषिते = सुभाषिणि ! सुभगे = सौभाग्यशालिनि चेत् = यदि । आद्यं त्रितयं = प्रथममक्षरत्रयं प्रथमं द्वितीयं तृतीयं चेत्यर्थ ! अथ = अनन्तरम् अष्टमं नवानामन्त्यं नवान्त्यं = दशमं अन्त्यस्य समीपमुपान्त्यं उपान्त्येन सहितं सोपान्त्यम् = अन्त्यस्य त्रयोदशाक्षरस्य समीपवर्ति द्वादशाक्षरमित्यर्थः गुरुस्यात् = दीर्घं भवेत् महेशस्य नेत्राणि महेशनेत्राणि, महेशनेत्राणि च दिशश्च महेशनेत्रदिशः तैः महेशनेत्रदिग्भिः = त्रिभिर्दशभिश्चेति भावः । विश्रामः = यतिः भवति ननु = निश्चयेन सा प्रहर्षिणी विज्ञेया = सा प्रहर्षिणीनाम्ना ज्ञातव्या ।

भावार्थ—प्रथम तीन अक्षर, आठवाँ, दशवाँ तथा बारहवाँ और अन्तिम (तेरहवाँ) अक्षर गुरु हो तथा तीन और दश अक्षरों पर यति हो तो उसे प्रहर्षिणी समझें ।

टिप्पणी—यह भी तेरह अक्षरों के पाद का छन्द है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्" मगण ऽ ऽ ऽ नगण । । । जगण । ऽ । रगण ऽ । ऽ तथा गुरु ऽ जिसमें हो वह प्रहर्षिणी छन्द है ।

अन्य उदाहरण—

ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

विद्वांसो यदि मम दोषमुद्गिरेयुर्यद्वा ते गुणगणमेव कीर्तयेयुः ।
तत्तुल्तं वत मनुते मनो मदीयं उत्कृष्टं यदि पुनरेवमाह मन्दः ॥

अर्थ—विद्वान् लोग मेरे दोषों का बखान करें अथवा मेरे गुण गायें, दोनों समान हैं, क्योंकि मेरा मन जिसे अच्छा समझता है मैं वही करता हूँ ।

३२. वसन्ततिलका

S S I S I I I S I I S I S S

आद्यं द्वितीयमपि चेद् गुरु तच्चतुर्थं
यत्राष्टमं च दशमान्त्यमुपान्त्यमन्त्यम् ।
कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतङ्गजेन्द्रे ।
कान्ते वसन्ततिलकां किल तां वदन्ति ॥ ३६ ॥

अन्वय— कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतङ्गजेन्द्रे ! कान्ते ! यत्र आद्यं द्वितीयं चतुर्थम् अष्टमं दशमान्त्यम् उपान्त्यम् अन्त्यं च अपि गुरु चेद् तां वसन्ततिलकां वदन्ति किल ।

पदार्थ—कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतङ्गजेन्द्रे-कामरूप अङ्कुश से वश में कर लिया है कामी रूप मत्तहाथियों को जिन्होंने, उनमें श्रेष्ठ ! कान्ते=सुन्दरि ! यत्र=जिसमें । आद्यं=पहला । द्वितीयं=दूसरा ।‌चतुर्थं=चौथा । अष्टमं=आठवाँ । दशमान्त्यं=दशम के बादका (ग्यारहवाँ) । उपान्त्यं=अन्त्य से पहला (तेरहवाँ) अपि च=और । अन्त्यं-अन्तिम (चौदहवाँ) वर्ण । गुरु चेद्=दीर्घ हो तो । तां=उसे । वसन्ततिलकां वदन्ति किल=वसन्ततिलका कहते हैं ।

व्याख्या— काम एव अङ्कुशः कामाङ्कुशः तेन अङ्कुशिताः, कामिनः एव मत्तगजेन्द्राः कामिमत्तगजेन्द्राः, कामङ्कुशाङ्कुशिताः काममत्तगजेन्द्राः यया सा तत्संबुद्धौ हे कामाङ्कुशाङ्कुशितकामिमतङ्गजेन्द्रे=कन्दर्प-रूपेणास्त्रविशेषेण वशीकृतकामिरूपमत्तकरीन्द्रे । कान्ते=सुन्दरि । यत्र= वृत्ते आद्यं= प्रथमं द्वितीयं चतुर्थम् अष्टमं दशमस्य अन्त्यं दशमान्त्यं=एकादशम् अन्त्यस्य समीपमुपान्त्यं=अन्त्यात्पूर्वो वर्णः अन्त्यं=चतुर्दशं चापि अक्षरमितिशेषः गुरु चेद्= दीर्घं स्यात् तां किल=तां निश्चयेन वसन्ततिलकां वदन्ति=वसन्ततिलकाख्यया ब्रुवन्ति ।

भावार्थ—जिस छन्द में पहला, दूसरा, चौथा, आठवाँ, ग्यारहवाँ, तेरहवाँ और चौदहवाँ अक्षर गुरु हो उसे वसन्ततिलका कहते हैं।

टिप्पणी:—यह चौदह अक्षर के पाद का छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' जिसमें तगण ऽऽ। भगण ऽ।। जगण ।ऽ। जगण ।ऽ। तथा दो गुरु ऽऽ हों वह वसन्ततिलका छन्द है।

अन्य उदाहरण—

ऽऽ। ऽ ।।।ऽ।।ऽ। ऽ ऽ

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी
दैवं प्रधानमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं विहाय कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः॥

अर्थ— उद्योग करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष को ही लक्ष्मी प्राप्त होती है 'भाग्य प्रधान है' ऐसा तो कायर लोग कहते हैं, इसलिये भाग्य के भरोसे न रहकर अपनी शक्ति भर पुरुषार्थ करो प्रयत्न करने पर भी यदि सिद्धि न मिली तो किसे दोष दें।

विशेष— यह छन्द उद्धर्षिणी, सिंहोन्नता और मधुमाधवी नाम से भी ग्रन्थान्तरों में पाया जाता है।

३३ मालिनी

।।।।।। ऽऽ ऽ।ऽ ऽ। ऽ ऽ

प्रथमसगुरुषट्कं विद्यते यत्र कान्ते।
तदनु च दशमं चेदक्षरं द्वादशान्त्यम्।
करिभिरथ तुरङ्गैर्यत्र कान्ते विरामं
सुकविजनमनोज्ञा मालिनी सा प्रसिद्धा॥३७॥

अन्वय—कान्ते ! यत्र प्रथमं षट्कं तदनु दशमं द्वादशान्त्यं च अक्षरम् अगुरु विद्यते चेत् करिभिः अथ तुरङ्गैः यत्र विरामः सुकविजनमनोज्ञा सा मालिनी प्रसिद्धा ।

पदार्थ—कान्ते=सुन्दरि । यत्र=जिसमें । प्रथमं षट्कं=पहले ६ अक्षर । तदनु=उसके बाद दशमं=दशवाँ । द्वादशान्त्यं=१२ के बाद (तेरहवाँ) अक्षर । अगुरु विद्यते चेत्=गुरु न हो तो । करिभिः=आठ । अथ=और । तुरङ्गैः=सात (अक्षरों) से । विरामः स्यात्=विश्राम हो तो । सुकविजन-मनोज्ञा=सत्कवियों को अच्छी लगने वाली । सा=वह । मालिनी प्रसिद्धा=मालिनी नाम से प्रसिद्ध है ।

व्याख्या—कान्ते ! = हे सुन्दरि ! यत्र प्रथमम्=आद्यं षट्कं=षडक्षराणां समूहः प्रथमाक्षरतः षष्ठाक्षरपर्यन्तमितिभावः तस्मादनु तदनु=तत्पश्चाद् दशमं द्वादशस्य अन्त्यं द्वादशान्त्यं=द्वादशानन्तरभवं त्रयोदशमित्यर्थः अक्षरं=वर्णः न गुरु अगुरु=ह्रस्वं विद्यते चेत् अथ करिभिः=अष्टभिः तुरङ्गैः सप्तभिः विरामः=यतिः स्यात् शोभनाश्च ते कवयः सुकवयः ते एव जनाः सुकविजनाः तेषां मनोज्ञा इति सुकविजनमनोज्ञा=विबुधजनमनोहरा सा मालिनी = मालिनी-संज्ञया प्रसिद्धा=विख्याता ।

भावार्थ—जिसमें प्रारम्भ के ६ अक्षर, दशवाँ तथा तेरहवाँ अक्षर गुरु न हो (अर्थात् ये अक्षर ह्रस्व हों) तथा आठ और सात पर विराम हो उसे मालिनी कहते हैं ।

टिप्पणी—यह १५ अक्षर के पाद का छन्द है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"न न म य य युतेयं मालिनी भोगिलोकैः" नगण ।।। नगण ।।। मगण ऽऽऽ यगण ।ऽऽ यगण ।ऽऽ जिसमें हों और भोगि (नाग) = आठ तथा लोक=सात पर विराम हो उसे मालिनी कहते हैं ।

अन्य उदाहरण—

।।। ।।। ऽऽ ऽ। ऽऽ। ऽऽ

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

अर्थ—अतुलपराक्रम वाले, स्वर्णशिखर जैसी पीली देहवाले, दैत्यरूपी वन को जलाने के लिये अग्नि जैसे, ज्ञानियों में अग्रणी, सम्पूर्ण गुणों के कोष, वानरों के अधिपति, रामचन्द्रजी के श्रेष्ठ दूत, वायुपुत्र हनुमान्‌जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

३४. हरिणी

।।S ।।S SS S S ।S ।।S ।S

सुमुखि लघवः पञ्च प्राच्यास्ततो दशमान्तिक-
स्तदनु ललितालापे ! वर्णौ यदि त्रिचतुर्दशौ ।
प्रभवति पुनर्यत्रोपान्त्यः स्फुरत्करकङ्कणे ।
यतिरपि रसैर्वेदैरश्वैः स्मृता हरिणीति सा ॥३८॥

अन्वय—सुमुखि ! ललितालापे ! स्फुरत्करकङ्कणे ! यत्र प्राच्याः पञ्च-वर्णाः लघवः ततः दशमान्तिकः लघु तदनु यदि त्रिचतुर्दशौ वर्णौ पुनः उपान्त्यः (लघुः) प्रभवति यत्र रसैः वेदैः अश्वैः यतिः अपि (भवति) सा हरिणी स्मृता।

पदार्थ—सुमुखि=सुन्दर मुखवाली। ललितालापे=मधुरवाणीवाली। स्फुरत्करकङ्कणे=चमकते हुए कंगनोंवाली ! यत्र=जहाँ। प्राच्याः=प्रारम्भ के। पञ्च=पाँच वर्ण। तदनु=उसके बाद। यदि त्रिचतुर्दशौ=तेरहवाँ और चौदहवाँ। पुनः=फिर। उपान्त्यः=अन्त से पहला (सोलहवाँ) भी (लघु) प्रभवति=होता है। रसैः=६ वेदैः=४ अश्वैः=७ वर्णों से। यतिः अपि=विराम भी हो तो, सा हरिणी स्मृता=वह हरिणी कहलाती है।

व्याख्या—शोभनं मुखं यस्याः सा सुमुखी संबुद्धौ हे सुमुखि !=सुवदने ! ललितः आलापो यस्याः सा ललितालापा संबुद्धौ हे ललितापे=मधुरभाषणे ! स्फुरत् करे कङ्कणं यस्याः सा स्फुरत्करकङ्कणा संबुद्धौ स्फुरत्करकङ्कणे=भास्वत्करवलये। यत्र=वृत्ते प्राच्याः=आद्याः पञ्च=प्रथमतः पञ्चमं यावत् वर्णाः। लघवः=ह्रस्वाः ततः=अनन्तरं दशमस्य अन्तिकः दशमान्तिकः=दशमसमीपवर्ती एकादश इत्यर्थः, लघुः स्यादिति शेषः। तदनु=तत्पश्चात्

यदि त्रिदशश्च चतुर्दशश्च त्रिचतुर्दशौ=त्रयोदश: चतुर्दशश्च वर्णौ लघू भवत: । पुन: यत्र अन्त्यस्य समीपम् उपान्त्य: = अन्त्यवर्णस्य पूर्ववर्ती षोडशो वर्ण इत्यर्थ: लघु: प्रभवति । तथा रसै:=षड्भि: वेदै: = चतुर्भि: अश्वै:=सप्तभिश्च वर्णै: यति: = विश्रामो भवति सा = एवं विधा हरिणीस्मृता=हरिणीत्युच्यते बुधै-रिति शेष: ।

भावार्थ—जिसमें प्रारम्भ के पाँच, ग्यारहवाँ, तेरहवां और सोलहवाँ अक्षर लघु हों तथा ६, ४ और ७ अक्षरों पर विराम हो उसे हरिणी कहते हैं ।

टिप्पणी—यह सत्रह अक्षरों के पाद का छन्द है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"रसयुगहयैर्न्सौ म्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा" छ: चार और सात पर विराम हो तथा नगण ।।। सगण ।।ऽ मगण ऽऽऽ रगण ऽ।ऽ सगण ।।ऽ तथा लघु गुरु ।ऽ हो तो हरिणी छन्द है ।

अन्य उदाहरण—

। ।।।।ऽ ऽऽऽऽ ।ऽ।।ऽ।ऽ
न समरसना: कालेभोगाश्चलं धनयौवनं
कुरुत सुकृतं यावन्नैवं तनु: प्रविशीर्यते ।
किमपि कलना कालस्येयं प्रधावति सत्वरा
तरुणहरिणी सन्त्रस्तेव प्लवप्रविसारिणी ।।

अर्थ—भोग सदा एक सा स्वाद (सुख) नहीं देते, धन और यौवन अत्यन्त चञ्चल हैं (सदा नहीं रहते) इसलिये हे मनुष्यो ! जब तक यह शरीर क्षीण नहीं हो जाता तबतक पुण्य कर लो । क्योंकि काल (समय-या यमराज) की यह गणना अत्यन्त वेग से ऐसे दौड़ रही है, जैसे कोई डरी हुई तरुण हरिणी छलांग भर रही हो ।।

३५. शिखरिणी

| S S S S S | | | | | S S | | | S

यदा प्राच्यो ह्रस्वः कमलनयने ! षष्ठक परा-
स्ततो वर्णाः पञ्च प्रकृतिसुकुमाराङ्गि ! लघवः ।
त्रयोऽन्ये चोपान्त्यास्तदनु जघनाभोगसुभगे !
रसैरीशैर्यस्यां भवति विरतिः सा शिखरिणी ॥३६॥

अन्वय--कमलनयने ! प्रकृतिसुकुमाराङ्गि ! जघनाभोगसुभगे ! यदा प्राच्यः ह्रस्वः ततः षष्ठकपराः पञ्च वर्णाः लघवः ततः अन्ये त्रयः उपान्त्याः च (लघवः) यस्यां रसैः ईशैः विरतिः सा शिखरिणी भवति ।

पदार्थ--हे कमलनयने=कमल जैसे नेत्रों वाली । हे प्रकृतिसुकुमाराङ्गि— हे स्वभाव से ही कोमल अङ्गों वाली । हे जघनाभोगसुभगे=जघन भाग के विस्तार से सौभाग्य शालिनी । यदा=जब । प्राच्यः = पहला (वर्ण) ततः= उसके बाद । षष्ठकपरा=छठे से आगे । पञ्चवर्णाः=पाँच अक्षर (सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ, दशवाँ, ग्यारहवाँ) । लघवः=लघु हों । तदनु=तत्पश्चात् । अन्त्याः=अन्त्य (सत्रहवें) के समीप के अन्ये त्रयः=और तीन (चौदहवाँ, पन्द्रहवाँ, सोलहवाँ) भी (लघु हों) । रसैः=छ ईशैः=११ वर्णों से विरति= विराम हो तो । सा शिखरिणी भवति=वह शिखरिणी होती है ।

व्याख्या--कमले इव नयने यस्याः सा कमलनयना संबुद्धौ हे कमलनयने= सरोजाक्षि ! प्रकृत्या सुकुमाराणि अङ्गानि यस्याः सा प्रकृतिसुकुमाराङ्गी संबुद्धौ हे प्रकृतिसुकुमाराङ्गि=स्वभावतः कोमलावयवे ! जघनयोः आभोगः जघनाभोगः तेन सुभगा संबुद्धौ हे जघनाभोगसुभगे=जघनोत्कृष्टशोभाशालिनि ! यदा प्राच्यः=प्रथमः वर्णः ह्रस्वः=लघुः ततः=तदनन्तरं षष्ठ एव षष्ठकः षष्ठकात् पराः=षष्ठादग्रिमाः पञ्च वर्णाः=सप्तमादेकादशपर्यन्ता इत्यर्थः लघवः=ह्रस्वाः स्युः तदनु=तत्पश्चात् उपान्त्याः=अन्त्यस्य समीपवर्तिनः अन्ये त्रयश्च=चतुर्दश पञ्चदश षोडशा वर्णा इत्यर्थः लघवः स्युः रसैः षड्भिः ईशैः=एकादशभिः यस्यां विरतिः=विश्रामो भवेत् सा शिखरिणी भवति ।

भावार्थ--जिसमें पहला, सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ, दशवाँ, ग्यारहवाँ तथा चौदहवाँ, पन्द्रहवाँ, सोलहवां अक्षर ह्रस्व हो (अर्थात् शेष अक्षर गुरु हों) और ६ तथा ११ अक्षरों पर विराम हो उसे शिखरिणी छन्द कहते हैं।

टिप्पणी—यह १७ अक्षरों के पाद का छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी" अर्थात् ६ और ११ अक्षरों पर विराम वाली यगण । ऽ ऽ मगण ऽ ऽ ऽ नगण । । । सगण । । ऽ भगण ऽ । । लघु । गुरु ऽ वाली शिखरिणी होती है।

अन्य उदाहरण—

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ
यदा किञ्चिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किञ्चित् किञ्चित् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे विगलितः॥

अर्थ—जब मैं अल्पज्ञ था तब हाथी की तरह मदान्ध हो गया था, मैं सर्वज्ञ हूँ यह घमंड मेरे मनमें भरा रहता था। जब थोड़ा थोड़ा विद्वानों के पास जाकर कुछ सीखने लगा तब समझ में आया कि मैं तो निरा मूर्ख हूँ, और मेरा सारा घमंड ज्वर की तरह उतर गया।

३६. पृथ्वी

। ऽ । । । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ
द्वितीयमलिकुन्तले ! यदि षडष्टमं द्वादशं
चतुर्दशमथ प्रिये गुरुगभीरनाभिह्रदे।
सपञ्चदशमन्तिमं तदनु यत्र कान्ते यतिः
करीन्द्रफणिभृत्कुलैर्भवति सुभ्रु पृथ्वी हि सा॥४०॥

अन्वय—अलिकुन्तले ! गभीरनाभिह्रदे ! प्रिये ! कान्ते ! सुभ्रु ! यदि द्वितीयं षडष्टमं द्वादशं चतुर्दशं सपञ्चदशम् अन्तिमं गुरु स्यात् तदनु यत्र करीन्द्रफणिभृत्कुलैः यतिः भवति सा हि पृथ्वी।

पदार्थ—अलिकुन्तले=भौंरों जैसे (काले) केशोंवाली ! गभीरनाभिह्रदे=गहरे नाभिकूप वाली । प्रिये कान्ते=प्रिय सुन्दरी ! सुभ्रु=सुन्दर भौंहों वाली । यदि द्वितीयं=दूसरा, षडष्टमं=छठा और आठवाँ । द्वादशं=बारहवाँ अथ=और, चतुर्दशं=चौदहवाँ, सपञ्चदशं=पन्द्रहवें के साथ । अन्तिमं=सत्रहवाँ अक्षर । गुरु=दीर्घ हो । तदनु=तत्पश्चात् । करीन्द्र=आठ, फणभृत्कुलैः=नौ पर । यतिः=विराम हो । सा हि पृथ्वी भवती=वह पृथ्वी छन्द होता है ।

व्याख्या—अलिवत् श्यामलाः कुन्तलाः यस्याः सा अलिकुन्तला संबुद्धौ हे अलिकुन्तले=भ्रमरवच्छ्यामकेशि ! नाभिरेव ह्रदो नाभिह्रदः गभीरः नाभिह्रदो यस्याः सा गभीरनाभिह्रदा संबुद्धौ हे गभीरनाभिह्रदे=निम्ननाभिकूपे प्रिये=प्रेयसि कान्ते=सुन्दरि ! सुष्ठु भ्रुवौ यस्याः सा सुभ्रूः संबुद्धौ हे सुभ्रु=शोभनभ्रूशालिनि ! यदि द्वितीयं षडष्टमं=षष्ठमष्टमं चेत्यर्थः द्वादशं चतुर्दशं पञ्चदशेन सहितं सपञ्चदशं=पञ्चदशाक्षरेण सहितम् अन्तिमं=सप्तदशाक्षरमिति-यावत् । गुरु=दीर्घः स्यात् तदनु=तत्पश्चात् करीन्द्राश्च फणभृत्कुलानि च तैः करीन्द्रफणभृत्कुलैः=करीन्द्राः=अष्टौ फणभृत्कुलानि=नव अष्टभिर्नवभिश्चाक्षरैरित्यर्थः यतिः विरामो भवेच्चेत् सा पृथ्वी भवति ।

भावार्थ—यदि दूसरा, छठा, आठवाँ, बारहवाँ, चौदहवाँ, पन्द्रहवाँ, और अन्तिम (सत्रहवाँ) अक्षर गुरु हो तथा आठ और नौ अक्षरों पर विराम हो तो वह पृथ्वी छन्द है ।

टिप्पणी—यह भी सत्रह अक्षरों के पाद वाला छन्द है । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः" जिसमें जगण ।ऽ। सगण ।।ऽ जगण ।ऽ। सगण ।।ऽ यगण ।ऽऽ लघु । गुरु ऽ हो वह पृथ्वीछन्द है ।

उदाहरण—

।ऽ ।।। ऽ।ऽ।।।ऽ ।ऽऽ ।ऽ

हताः समितिं शत्रवस्त्रिभुवने प्रकीर्णं यशः
कृतश्च गुणिनां गृहेनिरवधिर्महानुत्सवः ।
त्वया कृतपरिग्रहे क्षितिपवीर ! सिंहासने
मिलान्तनिरवग्रहाः फलवतो च पृथ्वी कृता ॥

अर्थ—हे वीर नृपते ! आपने इस सिंहासन पर बैठते ही युद्ध में शत्रुओं को मार डाला, त्रिभुवन में अपना यश फैला दिया, गुणीजनों का इतना सत्कार किया कि उनके घरों में सदा ही उत्सव हो रहे हैं और पृथ्वी को विघ्नों से रहित तथा उपजाऊ बना दिया।

३७. मन्दाक्रान्ता

SSS S ।।। ।।S S।SS।SS

चत्वारः प्राक् सुतनु गुरवो द्वौ दशैकादशौचे-
न्मुग्धे वर्णौ तदनु कुमुदामोदिनि ! द्वादशान्त्यौ ।
तद्वच्चान्त्यौ युगरसहयैर्यत्र कान्ते विरामो
मन्दाक्रान्तां प्रवरकवयस्तन्वि ! तां सङ्गिरन्ते ॥१६॥

अन्वय—हे सुतनु ! प्राक् चत्वारः गुरवः चेत् तदनु दशैकादशौ द्वौ वर्णौ (गुरू) मुग्धे ! कुमुदामोदिनि ! द्वादशान्त्यौ तद्वत् अन्त्यौ च (वर्णौ गुरू स्याताम् तथा) कान्ते ! यत्र युगरसहयैः विरामः स्यात् हे तन्वि प्रवरकवयः तां मन्दाक्रान्तां सङ्गिरन्ते ।

पदार्थ—हे सुतनु ! =सुन्दर देहवाली ! चेत् = यदि । प्राक्चत्वारः= पहले चार (१. २. ३. ४ वर्ण) । गुरवः=दीर्घ हों। तदनु=उसके बाद । दशैकादशौ=दशवां और ग्यारहवां । द्वौ वर्णौ=ये दो वर्ण (गुरु हों) । मुग्धे=भोली-भाली । कुमुदामोदिनि=चन्द्रवदने । द्वादशान्त्यौ=बारहवें के पश्चाद्वर्ती दो वर्ण (तेरहवां, चौदहवां) । तद्वत्=इसी प्रकार । अन्त्यौ=अन्तिम दो वर्ण (सोलहवां-सत्रहवां भी गुरु हों) । कान्ते=हे सुन्दरि । यत्र=जहां । युगरसहयैः=युग(४) रस (६) हय (७) अक्षरों पर विराम हो । तां=उसे । प्रवरकवयः श्रेष्ठकविजन । मन्दाक्रान्तां=मन्दाक्रान्ता नाम से । सङ्गिरन्ते = कहते हैं ।

व्याख्या—शोभना तनूर्यस्याः सा सुतनूः तत्संबुद्धौ हे सुतनु ! =सुन्दरि ! चेत् =यदि प्राक्=प्रथमे चत्वारः प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्था वर्णा इत्यर्थः । गुरवः=दीर्घाः भवन्ति तथा दशमश्चैकादशश्च दशैकादशौ द्वौ वर्णाविति शेषः तथा कुमुदमामोदयतीति कुमुदामोदिनी तत्संबुद्धौ हे कुमुदामोदिनि !=चन्द्रवदने

मुग्धे=मनोहरे द्वादशस्य अन्त्यौ द्वादशान्त्यौ=द्वादशात्पश्चाद्वर्तिनौ त्रयोदश—चतुर्दशावित्यर्थः तद्वच्च=तथैव अन्त्यौ=चरणान्तिमौ षोडश-सप्तदशाविति भावः गुरू भवेताम् कान्ते=मनोहरे ! यत्र=वृत्ते युगाश्च रसाश्च हयाश्च तैः युगरसहयैः =चतुःषट्सप्तभिरक्षरैः विरामः=यतिः स्यात् हे तन्वि ! =कृशाङ्गि प्रवराश्च ते कवयश्च प्रवरकवयः=कविश्रेष्ठाः ताम्=उक्तलक्षणां मन्दाक्रान्तां=मन्दाक्रान्ताख्यां सङ्गिरन्ते=कथयन्ति ।

भावार्थ—हे सुन्दरि ! जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम चार वर्ण (प्रथम द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ अक्षर), दशवाँ और ग्यारहवाँ, तथा बारह के बाद दो वर्ण (तेरहवाँ, चौदहवाँ) इसी प्रकार अन्तिम दो वर्ण (सोलहवाँ और सत्रहवाँ) भी गुरु हो, जहाँ क्रमसे चार छः और सात अक्षरों पर विराम होता हो उसे श्रेष्ठ कविगण मन्दाक्रान्ता कहते हैं ।

टिप्पणी—यह १७ अक्षरों के पाद का छन्द है । कालिदास मन्दाक्रान्ता छन्द के निर्माण में अत्यन्त पटु माने जाते हैं उनका सम्पूर्ण मेघदूत इसी छन्द में रचा गया है । इनकी देखादेखी अन्य सभी दूत-काव्य भी इसी छन्द में रचे गये हैं । वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्" जिसमें मगण ऽऽऽ भगण ऽ।। नगण ।।। दो तगण ऽऽ।ऽऽ। और दो गुरु ऽऽ हों तथा जलधि (४) षट् (६) अग (७) पर विराम हो उसे । मन्दाक्रान्ता कहते हैं ।

अन्य उदाहरण—

ऽऽ ऽऽ ।।। ।।ऽ ऽ। ऽऽ ।ऽ ऽ

वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशा
सौधोत्सङ्गप्रणयविमुखो मास्मभूरुज्जयिन्याः ।
विद्युद्दामस्फुरितचकितैस्तत्र पौराङ्गनानां
लोलापाङ्गैर्यदि न रमसे लोचनैर्वञ्चितोऽसि ॥

अर्थ—हे मेघ ! उत्तरदिशा (अलकापुरी) की ओर जाते हुए तुम्हारा मार्ग कुछ टेढ़ा पड़ेगा, फिरभी उज्जयिनी के ऊँचे-ऊँचे महलों को देखने से न चूकना । बिजली की चमक से चकाचौंध हुए, नागरिक युवतियों के चञ्चल कटाक्षों वाले नेत्रों का यदि तुमने आनन्द न लिया तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ है ।

३८. शार्दूलविक्रीडित

S S S | | S | S | | | S S S | S S | S

आद्याश्चेद् गुरवस्त्रयः प्रियतमे षष्ठस्तथा चाष्टमः
सन्त्येकादशतस्त्रयस्तदनु चेदष्टादशाद्यान्तिमाः ।
मार्तण्डैर्मुनिभिश्च यत्र विरतिः पूर्णेन्दुबिम्बानने !
तद्वृत्तं प्रवदन्ति काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितम् ।।४२।।

अन्वय—प्रियतमे ! पूर्णेन्दुबिम्बानने आद्याः त्रयः तथा षष्ठः अष्टमः च एकादशतः त्रयः तदनु अष्टादशाद्यान्तिमाः गुरवः यत्र मार्तण्डैः मुनिभिश्च विरतिः तद्वृत्तं काव्यरसिकाः शार्दूलविक्रीडितं प्रवदन्ति ।

पदार्थ—प्रियतमे=अत्यन्त प्रिये । पूर्णेन्दुबिम्बानने=पूर्णचन्द्रमण्डल जैसे मुखवाली । चेत्=यदि । आद्याः त्रयः=प्रारम्भ के तीन १, २, ३, षष्ठः= छठा । अष्टमः=आठवाँ एकादशतः त्रयः=ग्यारहवें से तीन (१२, १३, १४) तदनु उसके बाद । अष्टादशाद्यान्तिमाः=अठारहवें से दो आदि के (१६, १७) तथा एक अन्त का (१७ वां) ये वर्ण । गुरवः सन्ति = गुरु हों, च=और । मार्तण्डैः=बारह, मुनिभिः=सात अक्षरों से । यत्र=जहाँ । विरतिः=विराम हो । तद्वृत्तं=उस छन्द को । काव्यरसिकाः=कविलोग । शार्दूलविक्रीडितं प्रवदन्ति=शार्दूलविक्रीडित कहते हैं ।

व्याख्या—अतिशयेन प्रिया प्रियतमा संबुद्धौ हे प्रियतमे=प्रेयसि ! पूर्णश्चासौ इन्दुश्च पूर्णेन्दुः तस्य बिम्बमिवाननं यस्याः सा पूर्णेन्दुबिम्बानना संबुद्धौ हे पूर्णेन्दुबिम्बानने=पूर्णचन्द्रमण्डलसदृशवदने ! चेत्=यदि आद्याः= प्रथमाः त्रयः=वर्णाः प्रथम-द्वितीय-तृतीया इत्यर्थः षष्ठं तथा च अष्टमम् एकादशतः=एकादशाद्वर्णात् त्रयः द्वादशत्रयोदशचतुर्दशा इति भावः तदनु= तत्पश्चात् अष्टादशस्य आद्यौ च अन्तिमश्च अष्टादशाद्यान्तिमाः=अष्टादशवर्णस्यादौ षोडशसप्तदशौ तथा अन्तिम एकोनविंशश्च इत्येते वर्णाः गुरवः सन्ति= दीर्घा भवन्ति यत्र च मार्तण्डैः=द्वादशभिः मुनिभिः=सप्तभिश्च विरतिः= विरामो भवेत् तद्वृत्तं=तच्छन्दः काव्येषु रसिकाः काव्यरसिकाः=कवय इत्यर्थः शार्दूलविक्रीडितं प्रवदन्ति ।

भावार्थ—जिस छन्द में पहला, दूसरा, तीसरा, छठा, आठवाँ, बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ, सोलहवाँ, सत्रहवाँ तथा उन्नीसवाँ अक्षर दीर्घ हो, १२ तथा ७ पर विराम हो, उसे शार्दूलविक्रीडित छन्द कहते हैं।

टिप्पणी—यह १६ अक्षर का छन्द है। वृत्तरत्नाकर में इसका लक्षण है—"सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्" बारह और सात पर जहाँ विराम हो मगण ऽऽऽ सगण ।।ऽ जगण ।ऽ। सगण ।।ऽ तगण ऽऽ। तथा गुरु ऽ वाला शार्दूलविक्रीडित छन्द होता है।

अन्य उदाहरण—

ऽ ऽ ऽ ।।ऽ।ऽ।।।ऽ ऽ ऽ।ऽऽ।ऽ

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

अर्थ—जो कुन्दपुष्प, चन्द्रमा, हिम और हार जैसी स्वच्छ है, जो श्वेत वस्त्रों से आवृत है, ब्रह्मा विष्णु शङ्कर आदि देवता जिसको सदा प्रणाम करते हैं, वीणा के सुन्दर दण्ड से जिसके हाथ शोभित हैं (जो हाथ में वीणा लिये है), सम्पूर्ण रूपसे जड़ता को नष्ट करने वाली वह भगवती सरस्वती मेरी रक्षा करे।

३९. स्रग्धरा

ऽ ऽ ऽऽ। ऽऽ ।।।।।।ऽ ऽ।ऽ ऽ।ऽ ऽ

चत्वारो यत्र वर्णाः प्रथममलघवः षष्ठकः सप्तमोऽपि
द्वौ तद्वत्षोडशाद्यौ मृगमदतिलके षोडशान्त्यौ तथान्त्यौ।
रम्भास्तम्भोरुकान्ते ! मुनि मुनि-मुनि-भिर्दृश्यते चेद्विरामो
बाले वन्द्यैः कवीन्द्रैः सुतनु निगदिता स्रग्धरा सा प्रसिद्धा॥४३॥

अन्वय—मृगमदतिलके ! रम्भास्तम्भोरुकान्ते ! बाले ! सुतनु ! यत्र प्रथमं चत्वारः वर्णाः अलघवः षष्ठकः सप्तमः अपि षोडशाद्यौ द्वौ षोऽशान्त्यौ च तद्वत् मुनिमुनिमुनिभिः विरामः दृश्यते चेद् वन्दयैः कवीन्द्रैः सा प्रसिद्धा स्रग्धरा निगदिता ।

पदार्थ—मृगमदतिलके=कस्तूरी के तिलक वाली । रम्भास्तम्भोरुकान्ते =केले के खम्भे जैसे (चिकने) ऊरुओं से सुन्दर । बाले=भोलीभाली । सुतनु=सुन्दर शरीर वाली । यत्र=जिसमें । प्रथमं चत्वारः=पहले चार (१, २, ३, ४) वर्णाः=अक्षर । अलघवः = लघु न हों (अर्थात् गुरु हों) । षष्ठकः=छठा । सप्तमोऽपि=सातवाँ भी (गुरु हो) । षोडशाद्यौ द्वौ - सोलह से पहले के दो (चौदहवाँ पन्द्रहवाँ) । षोडशान्त्यौ = सोलह के बादके दो (सत्रहवाँ अठारहवाँ) तथा = और अन्त्यौ = अन्त के दो (बीसवाँ इकीसवाँ) तद्वत् = उसी प्रकार (अलघु = दीर्घ) हो । चेद् = यदि । मुनिमुनिमुनिभिः = सात सात सात अक्षरों पर । विरामः = यति । दृश्यते = दीखती हो तो । वन्दयैः = पूज्य, कवीन्द्रैः = कविश्रेष्ठों द्वारा, सा प्रसिद्धा = वह विख्यात (वृत्त) स्रग्धरा निगदिता = स्रग्धरा कही गई है ।

व्याख्या—मृगमदस्य तिलकं यस्याः सा मृगमदतिलका संबुद्धौ हे मृगमदतिलके = कस्तूरीमिश्रिततिलकाङ्किते ! रम्भायाः स्तम्भवद् ऊर्वोः कान्तिर्यस्याः सा संबुद्धौ हे रम्भास्तम्भोरुकान्ते = कदलीस्तम्भोपमोरुशोभे बाले ! = मुग्धे शोभना तनुः यस्याः सा सुतनूः संबुद्धौ हे सुतनु = सुन्दरि ! यत्र प्रथमं = पूर्वे चत्वारो वर्णाः = प्रथमद्वितीयतृतीयचतुर्थाक्षराणीति यावत् । न लघवः अलघवः = दीर्घाः षष्ठकः सप्तमोऽपि = षष्ठसप्तमवर्णावपि तद्वत् = तथैव षोडशस्य आद्यौ षोडशाद्यौ = चतुर्दशपञ्चदशौ द्वौ = वर्णौ षोडशस्य अन्त्यौ षोडशान्त्यौ=षोडशादग्रिमौ सप्तदशाष्टादशौ वर्णौ तथा अन्त्यौ = विंशेकविंशौ वर्णौ गुरूस्त इति शेषः मुनयश्च मुनयश्च मुनयश्च मुनिमुनिमुनयः तैः मुनिमुनिमुनिभिः = सप्तसप्तसप्तभिः वर्णैः विरामः = यतिः दृश्यते चेद् = अवालोक्येत प्रसिद्धा = विश्रुता सा कवीन्द्रैः = कविवर्यैः स्रग्धरा इति निगदिता = कथिता ।

ार्थ—यदि प्रथम चार वर्ण (१, २, ३, ४), छठा, सातवाँ, पन्द्रहवाँ, सत्रहवाँ, अठारहवाँ, बीसवां तथा इकीसवाँ अक्षर दीर्घ सात, सात, सात वर्णों पर यति हो तो उसे स्रग्धरा कहते हैं।

टिप्पणी—यह २१ अक्षर के पाद का छन्द है, वृत्तरत्नाकर में इसका ण है। "म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्" मगण SS रगण S I S भगण S I I नगण I I I तीन यगण I S S I S S I S S जिसमें हों और प्रत्येक सात अक्षर पर तीन बार विराम हो उसे स्रग्धरा कहते हैं।

अन्य उदाहरण—

S S S S I S S I I I I I S S I S S I S S

येषां श्रीमद्यशोदासुतपदकमले नास्तिभक्तिर्नराणां
येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्ता रसज्ञा।
येषां श्रीकृष्णलीलाललितरसकथासादरौ नैव कर्णौ
धिक्तान् धिक्तान् धिगेतान् कथयति सततं कीर्तनस्थो मृदङ्गः॥

अर्थ—जिन मनुष्यों की श्रीमान् यशोदातनय (श्रीकृष्ण) के चरण कमलों में भक्ति नहीं है, जिनकी जिह्वा भगवत्प्रेयसी गोपियों के गुणगान नहीं करती, जिनके कान श्रीकृष्ण लीला से ललित रसीली कथाओं को आदर पूर्वक नहीं सुनते उन्हें (ऐसे मनुष्यों को) धिक्कार है, उन्हें धिक्कार है, उन्हें धिक्कार है, ऐसा कीर्तन में बजता हुआ मृदङ्ग सदा कहता है।

—o—

हमारे महत्त्वपूर्ण छात्रोपयोगी प्रकाशन

जिनमें मूल पाठ के साथ संस्कृत-हिन्दी टीका, भूमिका नोट्स एवं अन्य छात्रोपयोगी सामग्री है।

अभिज्ञान शाकुन्तल	सुबोधचन्द्र पन्त
उत्तररामचरित	आनन्द स्वरूप
कादम्बरी (कथामुख)	रतिनाथ झा
काव्यदीपिका	परमेश्वरानन्द
किरातार्जुनीय (१-६ सर्ग)	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
चन्द्रालोक	सुबोधचन्द्र पन्त
नागानन्द नाटक	संसारचन्द्र
नीतिशतक	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
प्रतिमानाटक	श्रीधरानन्द शास्त्री
प्रसन्नराघव	रामशंकर त्रिपाठी
बालचरित	कमलेशदत्त त्रिपाठी
भट्टिकाव्य (१-८ सर्ग)	पाण्डेय शुक्ल
मृच्छकटिक	रमाशंकर त्रिपाठी
मालविकाग्निमित्र	संसारचन्द्र
मेघदूत	संसारचन्द्र
रघुवंश (१-१९ सर्ग)	धारादत्त शास्त्री
रत्नावलीनाटिका	रमाशंकर त्रिपाठी
वृत्तरत्नाकर	श्रीधरानन्द शास्त्री
वेणीसंहार	रमाशंकर त्रिपाठी
शिशुपालवध (१-४ सर्ग)	जनार्दन शास्त्री पाण्डेय
शुनःशेपोपाख्यान	सुषमा पाण्डेय
स्वप्नवासवदत्त	जयपाल विद्यालंकार
साहित्यदर्पण	शालिग्राम शास्त्री
सौन्दरनन्दकाव्य	सूर्यनारायण चौधरी
हितोपदेश-मित्रलाभ	विश्वनाथ शर्मा

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता
वाराणसी, पुणे, पटना

ISBN 81-208-2576-4

9788120825765

मूल्य : रु० १२